ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - ७ | महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र | अप्रैल (प्रथम) २०१४

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

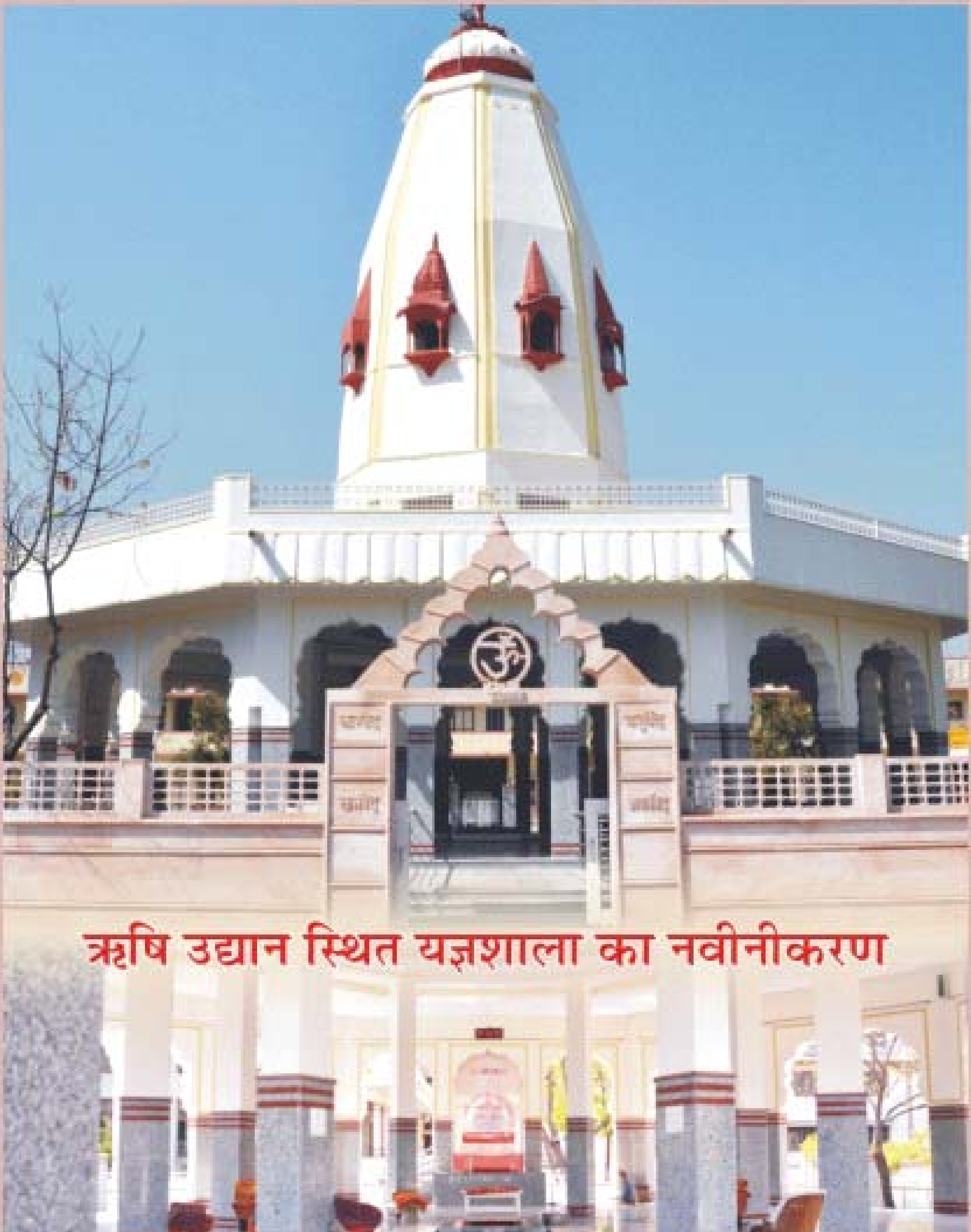

ऋषि उद्यान स्थित यज्ञशाला का नवीनीकरण

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ **अंक :** ७
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: चैत्र शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अप्रैल प्रथम २०१४

अनुक्रम

१. मोदी की जीत में भारत की जीत	सम्पादकीय	०४
२. तन्मर्त्यस्य देवत्वम्	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
४. पं. (मौलवी) महेश प्रसाद जी.....	श्रीमती कला	१४
५. कौन हैं हम भारतवासी?	ज्ञानेन्द्र मिश्र	१६
६. वेदों की बातें	रामप्रसाद शर्मा	२३
७. जीवन का बगीचा	सुकामा आर्या	२६
८. सत्यार्थप्रकाश क्यों पढ़ें	नारायण जिज्ञासु	३०
९. पुस्तक - परिचय	आचार्य सोमदेव	३१
१०. प्रतिक्रिया		३३
११. जिज्ञासा समाधान-६०	आचार्या शीतल	३४
१२. संस्था-समाचार		३७
१३. केरल में वैदिक-धर्म प्रचार यात्रा	बलेश्वर मुनि	३९
१४. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

मोदी की जीत में भारत की जीत

देश में जब प्रधानमन्त्री पद की योग्यता की बहस चलती है, तब व्यर्थ की बात लगती है। जिस देश में मनमोहनसिंह १० वर्ष तक प्रधानमन्त्री रहे तब उनमें प्रधानमन्त्री पद की कौनसी योग्यता थी। उनकी योग्यता पर टिप्पणी करते हुए समाचार पत्रों में लिखा जाता था। प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह से एक पत्रकार ने पूछा प्रधानमन्त्री जी दो और दो चार होते हैं या पाँच। मनमोहन सिंह जी का उत्तर था वैसे तो दो और दो चार होते हैं फिर भी सोनिया जी से पूछकर बताता हूँ। जब ऐसा व्यक्ति इस देश का प्रधानमन्त्री रह सकता है फिर मोदी के प्रधानमन्त्री होने में क्यों सन्देह किया जाता है। आवश्यकता संसद में बहुमत की है, शेष योग्यता तो गौण बात है।

यदि कोई मनमोहन सिंह की योग्यता के नाम पर उनका अर्थशास्त्री होना समझता है तो यह उसकी अज्ञानता है। इस अर्थशास्त्री से भारत का तो अनर्थ ही हुआ है। भारत सरकार में बहुत लोगों को देखकर लगता तो है वे देश की सरकार के अधिकारी हैं परन्तु वे काम अमेरिका का कार्यालय समझ कर करते हैं। पहले विश्व बैंक जैसे बड़े संस्थानों में उन्हीं की नौकरी करते रहे हैं। आज भी उन्हीं का आदेश इनको मानने में गौरव का अनुभव होता है। चाहे मनमोहन सिंह हों, योजना आयोग के अहलूवालियां हों या वित्त मन्त्री रहे पी. चिदम्बरम हों, सभी की निष्ठा देश के स्थान पर अमेरिका से जुड़ी हुई है। अमेरिका के साथ परमाणु समझौता करने हेतु मनमोहन सिंह ने अपने आप को झोंक दिया। रिश्वत देकर मत लिये परन्तु अमेरिका की इच्छा को पूरा करके दिखाया। विदेशी निवेश पर जैसा अमेरिका चाहे वैसी व्यवस्था करने में सरकार ने तत्परता दिखाई। प्रान्तीय सरकारें जितनी भी विपक्ष की थीं सबने विरोध किया परन्तु उन्होंने किसी की भी परवाह करने की आवश्यकता नहीं समझी। क्या यही एक प्रधानमन्त्री की योग्यता का उदाहरण है?

प्रधानमन्त्री पद तो मनमोहन सिंह के पास था परन्तु कार्यालय श्रीमती सोनिया के घर से चलता रहा। निर्णय दस जनपथ करता था और वे निर्णय प्रधानमन्त्री कार्यालय से जारी होते थे। सोनिया जी के मन्त्री-मण्डल में सम्मिलित होने के लिए न चुनाव लड़ने की आवश्यकता थी न संसद में बैठने की योग्यता। सोनिया का मन्त्री-मण्डल का नाम सलाहकार परिषद् था। इसमें उपस्थित होने के लिए सोनिया जी का विश्वासपात्र होना पर्याप्त था, हाँ जहाँ तक योग्यता का प्रश्न है उसमें भारत और भारतीयता से द्वेष होना चाहिए। हिन्दू शब्द सुनकर यदि वह घृणा से भर जाये तो इससे बड़ी योग्यता की वहाँ आवश्यकता नहीं थी। यहाँ बैठकर आप जितना अपने देश व हिन्दुओं के विरोध में काम कर सकते हो, आप का कार्य उतना ही प्रशंसनीय है। इसका उदाहरण है- अल्पसंख्यक सुरक्षा के नाम पर तैयार किया गया बिल। जिसे सदन में प्रस्तुत न कर पाने का दु:ख आजीवन सोनिया जी की मण्डली को रहेगा। भारत में जितने हिन्दू संगठन व संस्थायें हैं, सब को बन्द करने का प्रयास, हिन्दू मन्दिरों के चढ़ावे को ईस्लामी व ईसाइयत के प्रचार के लिए व्यय करना। इन मन्दिरों के कोष को मौलवियों-पादरियों-मदरसों के लिए व्यय करना, इस सरकार की बड़ी देश सेवा रही। हिन्दू नेताओं, सन्तों, संगठनों को बदनाम करने व जेल में डालने तथा झूठे मुकदमों में फंसाने का कार्य १० वर्ष में सरकारी तन्त्र व्यापक रूप में करता रहा क्या यह प्रधानमन्त्री पद की योग्यता है।

देश के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसंख्यकों का है, यह आदर्श वाक्य इसी सरकार की नीति का परिणाम है। जितना धन, साधन, सुविधा अल्पसंख्यक के नाम पर आतंकवादियों और देशद्रोहियों को दी गई आजतक के ज्ञात इतिहास में उसकी तुलना नहीं की जा सकती। किसी देश की सरकार अपने देश की बहुसंख्यक प्रजा को आतंकवादी घोषित करे और आतंकवादियों को निर्दोष यह सोनिया और मनमोहन की सरकार में ही सम्भव था। गत दिनों भारत की गुप्तचर संस्था के अधिकारी श्री आर.एन. सिंह ने एक बड़े षड़यन्त्र से पर्दा उठाया। उन्होंने बताया कि सोनिया और मनमोहन सरकार ने मुम्बई के आतंकी हमले को हिन्दू आतंकवाद घोषित करने की योजना बना ली थी। उस योजना के अनुसार कसाब को जहर खाकर आत्महत्या कर लेनी थी। उसके बाद इसको किसने किया? इसका प्रमाण नहीं रहता और बड़ी सरलता से इसे हिन्दू आतंकवाद का नाम देकर हिन्दुओं को बदनाम किया जाता। इसके दो लाभ होते इससे इस्लाम आतंकवाद की बदनामी से बच जाता तथा मुस्लिम समाज के मत सोनिया जी की झोली में आ जाते। इसके अतिरिक्त भी श्री सिंह ने बताया सरकार कैसे षड़यन्त्र में लगी थी तथा हिन्दू आतंकवाद का

इतिहास घड़ा जा रहा था। आपने बताया मालेगांव फिर समझौता एक्सप्रेस को हिन्दू आतंकवाद का नाम दिया, कुछ हिन्दू अधिकारियों को जो सेना में कार्यरत थे उन्हें षड्यन्त्रकर्त्ता बताया गया तथा इस घटना के लिए उन्होंने सेना से आर.डी.एक्स चुराया, ऐसा आरोप लगा था परन्तु प्रश्न उठा यदि इन्होंने सेना से आरडी.एक्स चुराया कहा जाता है तो यह असत्य है क्योंकि सेना में आर.डी.एक्स. काम में नहीं लिया जाता। फिर भी हिन्दू आतंकवाद के नाम पर लोगों को जेलों में ठूंसा गया, प्रताड़ित किया गया और आज भी प्रताड़ित किया जा रहा है, क्या यह है प्रधानमन्त्री मनमोहनसिंह की योग्यता। भारतीय सेना के कार्यों की निन्दा करना, सेना का मनोबल कम करना तथा सीमा पर सेना को उचित कार्यवाही न करने देना। सेना के शस्त्रास्त्र में, युद्धक पोत खरीदने में जगुआर विमान खरीदने में भारी भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद करके राष्ट्र की सेना को कमजोर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई। थल सेनापति को अपमानित कर व्यर्थ में विवाद उत्पन्न करके नीचा दिखाना। उन्हें पद से हटाकर भ्रष्टाचारियों की नियुक्ति करना, यह देश के साथ द्रोह करना है। यह योग्यता है प्रधानमन्त्री की।

चीन, पाकिस्तान, बंगलादेश के द्वारा हमारे सैनिकों के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार की अनदेखी करना। चीन द्वारा सीमा का अतिक्रमण किये जाने पर प्रतिकार करना तो दूर उसकी निन्दा न करना। उसकी शर्तों पर समझौता करना, यह वही व्यक्ति कर सकता है जिसके हृदय में देश के लिए गौरव का भाव न हो।

केवल मुसलमानों के मन में अपने लिए सद्भाव उत्पन्न करने के लिए सोनिया-मनमोहन सरकार ने भारत सरकार की महत्त्वपूर्ण गुप्तचर संस्थानों को, रॉ. केन्द्रीय जाँच ब्यूरो, गुप्तचर विभाग के अधिकारियों को एक दूसरे के विरुद्ध झूठे संघर्ष की कहानियाँ गढ़ने का दोषी बनाया, इन संस्थाओं की प्रतिष्ठा समाप्त की तथा उच्च अधिकारियों को अपमानित किया, प्रताड़ित किया। जिन लोगों ने बड़े संघर्ष कर अपने प्राण हथेली पर रखकर इस देश की एकता और अखण्डता की रक्षा की, ऐसे लोगों को अपराधी बताने और अपमानित करने में कसर नहीं छोड़ी, पुलिस अधिकारी गिल के साहस, निष्ठा से पंजाब से आतंकवाद समाप्त हुआ, उस व्यक्ति पर एक छोटे अधिकारी से आरोप लगावायें कि इन्होंने झूठे संघर्ष में निर्दोष लोगों को मरवाया। ऐसा करना अधिकारियों की निष्ठा पर सन्देह करना तथा संघर्ष के लिए कार्य करने वालों को हतोत्साहित करना है। देश-विदेश में संसद में, मञ्चों से सोनिया-मनमोहन की सरकार ने भगवा आतंकवाद, हिन्दू आतंकवाद, संघ का आतंकवाद, न जाने कितने आतंकवाद हिन्दू समाज पर लाद दिये और इन्हीं के भरोसे से इस देश की सत्ता पर अधिकार जमाये रखने की योजना बनाई थी।

इस सरकार ने जो आतंकवादी थे उन्हें पुरस्कृत करने में कसर नहीं छोड़ी। डॉ. विनायक सेन जो माओवादियों के साथ देश में आतंक फैलाते पकड़े गये थे उन्हें छुड़ाने के लिए विदेशों से मानवाधिकारवादी हमारी न्याय प्रणाली की जाँच करने न्यायालय पहुँचे। जमानत पर छूटने पर न्याय हुआ माना गया। जैसे ही जेल से छूटे भारत सरकार ने योजना आयोग का सदस्य बना लिया। ये व्यक्ति देश के लिये काम करने वाले लोगों को दण्डित कराने में लग गया।

भारत पर आतंकवाद के द्वारा आक्रमण किया जा रहा है और इस आतंकवाद को भारत सरकार और भारत के स्वयं सेवी संगठन संरक्षण दे रहे हैं। संसार का इससे विचित्र देश और कहाँ देखने को मिलेगा जो शत्रु को आक्रमण के लिए अपने देश में बुलाता है, उनके आक्रमण करने पर उनकी हानि न हो, उनकी सुरक्षा के लिए भारत सरकार स्वयं दीवार बनकर खड़ी हो जाती है।

भारत की रक्षा के लिए बनी संस्थाओं को सरकार हाथ बांधकर मैदान में लड़ने भेजती है। हमारे देश में आतंकवादी निश्चय करते हैं कि देश के किस भाग में कितनी सेना रहनी चाहिए। इसका उदाहरण कश्मीर है, कश्मीर के आतंकवाद को सेना ने कुचल दिया परन्तु उसका श्रेय सेना को नहीं दिया गया। हाँ उसे यह अपयश अवश्य मिला कि उसने निर्दोष लोगों की हत्या की। उन मारे गये लोगों को निर्दोष भी आतंकवादी ही सिद्ध करेंगे। कश्मीर के लिए कहा जा रहा है सेना वहाँ आवश्यकता से अधिक है। सेना कितनी कहाँ रहनी चाहिए यह निर्णय अमेरिका, पाकिस्तान या आतंकवादी करेंगे। जब सेना ही अपराधी हो गई तो आतंकवादी ही निर्दोष होंगे, उन्हें यह देश पुरस्कार के रूप में मिलेगा। सेना के बलिदान से रक्षित कश्मीर के भारत का भाग है या नहीं इसका निर्णय आतंकवाद के धन से पोषित स्वयंसेवी संगठन करेंगे। प्रशान्त भूषण जैसे आतंकवादी समर्थक व्यक्ति का कहना है कि कश्मीर भारत का नहीं पाकिस्तान का भाग है। प्रशान्त भूषण के राजनीतिक संगठन आप के नक्शे में

कश्मीर को पाक का भाग दर्शाया जाता है। कश्मीर में सेना को विशेष अधिकार प्राप्त है। जिससे आतंकवादियों को पकड़ा जा सके, सारे स्वयंसेवी संगठन चिल्ला-चिल्लाकर माँग करते हैं, सेना से यह विशेषाधिकार वापस लिया जाए।

देश में आतंकवाद की लड़ाई लड़ने वाली सेना को कहा जाता है कि वह गोली चलाये ही नहीं, चलाये तो धीरे से चलाये। सेना को अभी तक पता नहीं है धीरे से चलने वाली गोली कहाँ बनी है और कैसे धीरे चलती है। हमारी सेना और पुलिस के जवानों का इससे अधिक दुर्भाग्य क्या होगा। यदि वो आतंकवाद पर कार्यवाही नहीं करते तो भी उन्हें दोषी बताया जाता है और कार्यवाही करते हैं तो गला फाड़-फाड़कर उनपर कानूनी कार्यवाही करने की माँग की जाती है। इस देश की सरकार के लिए एक आतंकवादी का जीवन अधिक मूल्यवान है, सैकड़ों सैनिकों और हजारों नागरिकों की तुलना में।

पंजाब में आतंकवाद के समय २०-२५ हजार निर्दोष लोगों की हत्या की गई परन्तु उनके पक्ष में सहानुभूति के दो शब्द बोलने वाला कोई नहीं परन्तु आतंकियों का स्यापा पढ़ने के लिए देश-विदेश के स्वयं सेवी संगठन और भारत सरकार आगे बढ़कर आती है। कश्मीर में चालीस हजार से भी अधिक व्यक्तियों की हत्या हुई। आतंकवादी नक्सलवादी संगठनों ने देश के अनेक भागों के हजारों निर्दोष लोगों की हत्या की, उनके अधिकारों की उनके प्रति कर्त्तव्य की बात कोई सरकार और कोई संगठन नहीं करता, क्यों?

कानून इस देश में इस देश के विभाजन करने के लिए बनाया गया है। वह है मानव अधिकार कानून, इस कानून की कार्यवाही देखने से स्पष्ट होगा इस कानून के सहारे हर सैनिक, हर पुलिस के जवान को दण्ड देने के लिए भारत सरकार स्वयं सेवी संगठन जी-जान लगा देते हैं। आतंकवादियों को संरक्षण देना इस कानून का मुख्य उद्देश्य है। इसके लिए विदेशों से पैसा इन संगठनों को मिलता है। इस कानून की बात करने वाले संगठनों के लिए देश, इस देश की जनता, उसकी सुरक्षा कोई अर्थ नहीं रखते। ये आतंकवादियों को सुरक्षा कवच देना ही इनको मिलने वाले पैसों के बदले का कार्य है। आज इस देश को ऐसे कानून की आवश्यकता है जो देश की रक्षा करने वाले और उनके परिवारों को संरक्षण दे, यह कार्य वर्तमान सरकार से सम्भव नहीं। आज आतंकवाद ने हमें इन कानूनों के माध्यम से गुलाम बना रखा है। ये संगठन इस देश के खण्ड-खण्ड करने में लगे हैं। अत: आज आवश्यकता है ऐसे व्यक्ति की जो इस देश को अपना कह सके, जो इस देश की पहचान हो, जो देश के नाम से जाना जाय, जिस का नाम समर्थ, सशक्त, उच्च देश का प्रतीक बन सके।

इस तरह की सरकार, इस तरह के लोग इनके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए मैदान में पिछले पन्द्रह वर्षों से कौन डटा है। हो सकता है वह अर्थशास्त्री न हो, क्योंकि यह प्रमाण-पत्र तो अमेरिका जिसे देगा वह अर्थशास्त्री होगा। लोग उसे मौत का सौदागर कहते हैं, हत्यारा कहते हैं। आतंकवादी कहते हैं, दहशतगर्द कहते हैं, मुसलमान, ईसाई लोग उसे अल्पसंख्यकों का शत्रु मानते हैं। पूरी भारत सरकार १० साल से उसे बदनाम करने में लगी है, सरकार की सारी संस्थायें उसे अपराधी सिद्ध करने में एड़ी से चोटी तक का जोर लगा रही हैं। सारे आयोग, सारे न्यायालय, सारे संगठन, विदेशी शक्तियाँ, अमेरिका, यूरोप, पाकिस्तान सभी उसे जेल में सीखचों में देखना चाहते हैं। उसको जेल में डालने के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने गुजरात से बाहर उसके विरुद्ध जाँच के आदेश दे डाले। कोई सभा, कोई समाचार, कोई मञ्च, उसको गाली दिये बिना अपने कार्यक्रम पूर्ण नहीं मानता। इस देश के प्रगतिशील उसके नाम को आतंकवाद का पर्याय मानते हैं। इसके लिए ईसाई उसका विरोध करते हैं, मुसलमान उसे शत्रु समझते हैं। राजनीतिज्ञ उसे अछूत मानते हैं। उसके संगठन के लोग उसे अहंकारी मानते हैं। ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिस एक व्यक्ति के पीछे देश-विदेश की सरकारें, सारे दूरदर्शन के चैनल, सारे समाचार पत्र, सारे राजनीति के धुरन्धर, उसकी अपनी पार्टी के लोग, अपनी सरकार के लोगों ने उसे गिराने, पछाड़ने, नीचा दिखाने के लिए जी जान न लगा दी हो। लोगों ने इस प्रयास में उसकी पत्नी को ढूंढ़ निकाला। किसी महिला मित्र को खोज लाये, फिर भी आज वह अडिग, अपराजेय, दृढ़ता के साथ खड़ा है। शत्रुओं को हुकार रहा है। क्या इतनी योग्यता किसी व्यक्ति के प्रधानमन्त्री होने के लिए कम है। आज महाभारत के अर्जुन की तरह नरेन्द्र मोदी में घोषणा सुनाई पड़ती है, न मुझे भागना स्वीकार है न दीनता, उस बात को आज नरेन्द्र मोदी के नाम से दोहरा सकते हैं-

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे, न दैन्यं न पलायनम्।

- धर्मवीर

तन्मर्त्यस्य देवत्वम्

- स्वामी विष्वङ्

संसार में केवल मनुष्य को ही मनुष्य होने का प्रमाण देना पड़ता है। मनुष्य से भिन्न पशु, पक्षी आदि को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है, इस बात को सभी मनुष्य जानते हैं। मनुष्य एक बार अपने मनुष्य होने को प्रमाणित कर लेता है, तो वह जीवन भर के लिए निश्चिन्त नहीं हो सकता। इसलिए मनुष्य को बार-बार प्रमाणित करना पड़ता है और प्रमाणित करने की शृंखला निरन्तर चलती रहेगी। जब तक मनुष्य जीवित रहेगा तब तक प्रमाणित करते रहना होगा। मनुष्य को ही प्रमाणित क्यों करना पड़ता है? पशु, पक्षी आदि को क्यों नहीं प्रमाणित करना पड़ता है? समाधान यह है कि परमपिता परमेश्वर ने पशु, पक्षी आदि को स्वाभाविक सीमित ज्ञान देकर भेजा है। इसलिए पशु, पक्षी आदि अपने स्वाभाविक ज्ञान का उपयोग करते हुए जीवन यापन करते हैं। पशु, पक्षी आदि को सिखाने पर वे एक सीमा तक ही सीख पाते हैं। मनुष्यों के समान सीख कर मनुष्यों जैसे प्रयोजनों को सिद्ध नहीं कर सकते हैं। मनुष्यों को प्रमाणित इसलिए करना पड़ता है, क्योंकि परमेश्वर ने पशुओं आदि के समान मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान देकर नहीं भेजा है। इसलिए मनुष्य को सब कुछ सीखना पड़ता है। यदि मनुष्य कुछ भी नहीं सीखता है, तो पशुओं से भी निकृष्ट बन जाता है। इस कारण मनुष्य को तब तक सीखना पड़ता है जब तक जीवित रहेगा। पशुओं में और मनुष्यों में बहुत अन्तर है। पशुओं को परमेश्वर ने स्वाभाविक ज्ञान देकर भेजा है, तो वे पशु अपने स्वाभाविक ज्ञान को नहीं भूलते हैं। परन्तु मनुष्यों को जो भी सिखाया जाता है प्रायः भूल जाते हैं। इसलिए मनुष्यों को बार-बार सिखाना पड़ता है या बार-बार स्मरण कराना पड़ता है। मनुष्य निरन्तर सीखता रहेगा तो अपने आपको निरन्तर प्रमाणित करता रहेगा। निरन्तर सीखना पुरुषार्थ के बिना सम्भव नहीं है अर्थात् मनुष्य निरन्तर पुरुषार्थ करता रहेगा, तो अवश्य अपने मनुष्यपन को प्रमाणित बनाये रखेगा। मनुष्य का मनुष्यत्व निरन्तर पुरुषार्थ पर निर्भर करता है।

संसार में मनुष्य पुरुषार्थ तो करते रहते हैं, परन्तु पुरुषार्थ की दिशा उचित-सत्य, न्याययुक्त, प्रासंगिक और प्रमाणपूर्वक होना चाहिए। पुरुषार्थ की तीन प्रकार की दिशाएँ हैं। पुरुषार्थ की एक दिशा ज्ञान की ओर है, दूसरी दिशा कर्म की ओर है और तीसरी दिशा उपासना या भक्ति की ओर है। मनुष्य प्रायः इन तीनों दिशाओं की ओर पुरुषार्थ नहीं कर पाते हैं। कुछ मनुष्य ज्ञान प्राप्त करने की दिशा की ओर आगे बढ़ते हैं, पुरुषार्थ भी करते हैं। ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य का कर्त्तव्य है, कर्त्तव्य होते हुए भी ज्ञानार्जन सत्य, न्याययुक्त होना चाहिए। यदि सत्य, न्याययुक्त होते हुए भी प्रासंगिक न हो, तो कितना ही ज्ञान प्राप्त किया जाये उसका कोई विशेष औचित्य नहीं रह पायेगा। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी इन्जीनियरिंग में प्रवेश पाना चाहता है, उसे इन्जीनियरिंग की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। प्रसंग चल रहा हो इन्जीनियरिंग प्रवेश परीक्षा की। उसी काल में किसी प्रसिद्ध क्रीड़ा (क्रिकेट या फुटबाल) भी चल रही हो, तो विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा से अधिक उस क्रीड़ा की जानकारी करने में पुरुषार्थ करता है। यहाँ पर क्रीड़ा की जानकारी उचित-सत्य, न्याययुक्त होते हुए भी प्रासंगिक नहीं है। ऐसी जानकारी पाने में पुरुषार्थ करना उचित नहीं है। यह एक उदाहरण मात्र है, ऐसे अनगिनत उदाहरण हो सकते हैं। कुछ लोग ज्ञान प्राप्त करने में जागरुक तो रहते हैं, परन्तु कौनसा ज्ञान कब, कितना और कैसे प्राप्त करना चाहिए, इसमें जागरूक कम मात्रा में रहते हैं। उचित-सत्य ज्ञान होते हुए भी मुख्य और गौण का भी ध्यान रखना पड़ता है। इन्जीनियरिंग में प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थी के लिए क्रीड़ा-ज्ञान और प्रवेश परीक्षा का ज्ञान दोनों सत्य ज्ञान होते हुए भी एक मुख्य बन रहा है और दूसरा गौण बन रहा है। प्रायः मनुष्य मुख्य को गौण बना लेता है और गौण को मुख्य बना लेता है। इसलिए मनुष्य को सफलता नहीं मिलती है। आज मनुष्य जनरल नॉलेज के नाम से बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करता है, परन्तु यदि वह पुरुषार्थ अप्रासंगिक हो, तो उस जानकारी का कोई औचित्य नहीं रहता। कुछ लोग यह नहीं जान पाते हैं कि ज्ञान कब प्राप्त नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए कर्म करने का प्रसंग हो और मनुष्य कर्म न कर ज्ञान प्राप्त करने हेतु अपने मुख्य कर्म को ही त्याग कर लेते हैं। जैसे एक गृहस्थी के दो सन्ताने हैं और धर्मपत्नी, कुल चार व्यक्तियों का परिवार है। गृहस्थी युवा है उसका दायित्व परिवार का भरण-पोषण करना है। उसे कर्म करना है, उसका मुख्य कर्त्तव्य कर्म करते हुए गौण रूप से ज्ञानार्जन करना है। यदि वह गृहस्थी कर्मरूपी मुख्य कर्त्तव्य को छोड़ कर ज्ञान प्राप्त करना रूपी गौण ज्ञान को मुख्य बना ले, तो वह

अन्याय युक्त होगा।

वह गृहस्थी परिवार का भरण-पोषण रूपी मुख्य कार्य को छोड़ कर विद्यार्थी के रूप में रह कर ज्ञानार्जन में पुरुषार्थ करे और वाणी से कहे कि मैं सत्य ज्ञान, विवेक वैराग्य के लिए पुरुषार्थ कर रहा हूँ। ऐसा कहना और विद्यार्थी बनना अनुचित होगा। क्योंकि किसी दायित्व को लेकर उसे पूरा न करना असत्य, अन्याय और अप्रमाणिक है। जिस प्रकार मुख्य ज्ञान और गौण ज्ञान होता है, उसी प्रकार मुख्य कर्म और गौण कर्म भी होता है और ऐसा ही मुख्य उपासना और गौण उपासना को भी जान लेना चाहिए। यहाँ पर मुख्य और गौण उपासना का अभिप्राय यह है कि संन्यासी, वानप्रस्थी जितना अधिक समय उपासना में लगाते हैं उतना गृहस्थी नहीं लगा पाते हैं। संन्यासियों, वानप्रस्थियों के लिए उपासना मुख्य है अर्थात् उपासना के लिए अधिक समय अधिक पुरुषार्थ करना है। इसलिए इनके लिए उपासना मुख्य है और गृहस्थियों के लिए कर्म मुख्य है अर्थात् कर्म के लिए अधिक समय, अधिक पुरुषार्थ करना है। इसलिए इनके लिए कर्म मुख्य और उपासना गौण है, ऐसा ही समझना चाहिए। यद्यपि कर्म गृहस्थी भी करते हैं और संन्यासी भी करते हैं परन्तु दोनों में यह अन्तर रहेगा कि गृहस्थी परिवार के लिए कर्म करते हैं और संन्यासी, वानप्रस्थी उपासना के लिए कर्म करते हैं। दोनों के कर्म सत्य, न्याय, प्रमाण युक्त होते हुए भी अनुचित बन सकते हैं, जिससे उन कर्मों को अप्रमाणित माना जायेगा। कैसे? यदि गृहस्थी वाले कर्मों को संन्यासी करने लग जाये और गृहस्थी, संन्यासी वालों के कर्म करने लग जाये। ऐसा करके मनुष्य अपने मनुष्यत्व को अप्रमाणित करने लगते हैं। इसलिए पुरुषार्थ की दिशा उचित-सत्य, न्याय युक्त प्रमाणपूर्वक होना ही चाहिए। मनुष्य को मनुष्य होने में प्रमाणित जहाँ ज्ञान के क्षेत्र में करना है, वहाँ कर्म व उपासना के क्षेत्र में भी करना पड़ता है। यदि ज्ञान के क्षेत्र में मनुष्य ने अपने को मनुष्यत्व के रूप में प्रमाणित कर लिया है तो कर्म और उपासना के क्षेत्र में प्रमाणित करने की क्या आवश्यकता है? हाँ आवश्यकता है, क्योंकि मनुष्य एक समान नहीं हैं। मनुष्य तीनों (ज्ञान, कर्म, उपासना) क्षेत्रों में बंटे हुए हैं। इसलिए तीनों क्षेत्रों में मनुष्य को प्रमाणित करना पड़ता है।

संसार में भले ही मनुष्य तीनों क्षेत्रों में बंटे हुए हो, परन्तु एक क्षेत्र में जीवन पर्यन्त रह कर कोई भी मनुष्य अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर पाया है, न कर सकता है। इसलिए जो कोई भी मनुष्य, मनुष्य जीवन के सर्वोच्च प्रयोजन को पूर्ण करना चाहता है, तो उसे ज्ञान, कर्म, उपासना रूपी तीनों क्षेत्रों में स्वयं को प्रमाणित करना पड़ेगा। अन्यथा मनुष्य कभी सर्वोच्च लक्ष्य को नहीं पा सकता। यद्यपि सभी मनुष्यों को तीनों क्षेत्रों में पुरुषार्थ करना चाहिए, परन्तु सब को जानकारी का अभाव है इसलिए सब मनुष्य तीनों क्षेत्रों में पुरुषार्थ कर नहीं पाते हैं। यदि कोई जानकार व्यक्ति तीनों क्षेत्रों में पुरुषार्थ करना चाहता है, तो उसे उचित-सत्य, न्याययुक्त और प्रमाणपूर्वक चलते हुए किस ज्ञान को कब प्राप्त करना, कितना प्राप्त करना और कैसे प्राप्त करना है, इसकी जानकारी अवश्य कर लेना चाहिए। इसी प्रकार कौन से कर्म कब करना, कितना करना और कैसे करना चाहिए और उपासना भी किसका करना, कब करना, कितना करना और कैसे करना, इसका भी जानकारी कर लेना चाहिए। यदि मनुष्य अपने कर्त्तव्यों को भली प्रकार जान लेता है, तो ज्ञान प्राप्त करने में, कर्म करने में और उपासना करने में निरन्तर पुरुषार्थ करता जायेगा। मनुष्य का पुरुषार्थ कर्त्तव्य से जुड़ जाता है, तो पुरुषार्थ की दिशा उचित-सत्य, न्याययुक्त और प्रमाणपूर्वक बन जाती है। प्रमाणपूर्वक सत्य, न्याययुक्त पुरुषार्थ ही मनुष्य को लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है और एक समय आयेगा, जिससे मनुष्य कह उठेगा कि मेरा पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं हुआ, मैं हताशा-निराशा से कोसों दूर हूँ, मेरे जीवन में पश्चात्ताप नहीं है। अशान्ति, अप्रसन्नता, शोक, क्षोभ, चिन्ता, भय आदि मुझे सताते नहीं हैं। जिस दिन मनुष्य वचनों-कथनों से प्रमाणित करना त्याग कर उचित-सत्य, न्याययुक्त ज्ञान से, कर्म से और उपासना से प्रमाणित करना प्रारम्भ कर देता है। उसी दिन से मनुष्य का मनुष्यत्व प्रमाणित होता हुआ दिखता है। यह प्रमाणित करने की श्रृंखला बिना बाधा, समस्या, व्यवधान के निरन्तर चलती रहनी चाहिए। जिससे मनुष्य का मनुष्यत्व सतत बना रह सके। इसी में मनुष्य का मनुष्यत्व है।

मनुष्य का मनुष्यत्व सदा बनाये रखने के लिए मनुष्य को कर्तव्यों का बोध कराते रहना चाहिए। मनुष्य को कर्तव्यों का बोध करवाने वाले माता, पिता, दादा, दादी, चाचा, चाची आदि अनेकों परिजन होते हैं। समाज में अनेकों लोग एक दूसरे को कर्तव्यों का बोध कराते रहते हैं। राष्ट्र का संचालन करने वाले भी बोध कराते रहते हैं। परन्तु विशेष रूप से शिक्षक-अध्यापकों का विशेष योगदान रहता है, जिनके माध्यम से मनुष्य सर्वाधिक शिक्षा ग्रहण करता रहता है। सीखने-सिखाने की परम्परा आदि सृष्टि से चली आ रही है। शिक्षा ग्रहण का प्रारम्भ ईश्वर से होता है। संसार में शिक्षा देने का प्रारम्भ आदि सृष्टि में परमेश्वर ने चार ऋषियों को वेद ज्ञान के माध्यम से प्रारम्भ किया है। इसलिए

यथार्थ रूप में मनुष्य के कर्त्तव्यों को बताने वाला ईश्वर है या ईश्वरीय वेद है, जिससे मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का बोध कर सकता है। ईश्वर ने ही सृष्टि की रचना की है, ईश्वर ने ही आत्मा को मनुष्य शरीर प्रदान किया है, ईश्वर ही मनुष्य को मनुष्यत्व का बोध कराने में पूर्ण समर्थ है। ईश्वर वेद के माध्यम से मनुष्य को मनुष्यत्व का बोध कराता है। इसलिए वेद कहता है '**मनुर्भव**' अर्थात् हे मनुष्य! तू मनुष्य बन अपने में मनुष्यत्व को स्थापित कर। मनुष्य शरीर को प्राप्त करने मात्र से तू मनुष्य नहीं कहला पायेगा, उसके लिए तुझे पुरुषार्थ करना है तभी तू मनुष्य बन पायेगा। वेद के माध्यम से ईश्वर कहना चाहता है कि मनुष्य को मनुष्य बनने के लिए निरन्तर पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। जिससे मनुष्य अपने मनुष्यत्व को स्थिर रख पायेगा। ईश्वर ने वेद में अनेकों उपायों का वर्णन किया है, जिन उपायों को अपना कर मनुष्य मनुष्यत्व को बना रख पायेगा। यदि यह कहा जाये कि ईश्वर की आज्ञा का पालन निरन्तर करता जाये, तो मनुष्य मनुष्यत्व को सदा स्थापित रख पायेगा। ईश्वर आज्ञा का उलङ्घन ही मनुष्य को मनुष्यपना से गिरा देता है। इसलिए मनुष्य को मनुष्य होने का प्रमाणित करना हो, तो वेद आज्ञा का पालन करने मात्र से प्रमाणित हो जाता है।

संसार में यद्यपि मनुष्य अपने मनुष्यत्व को सामान्य रूप से स्थापित करते रहते हैं अर्थात् सभी मनुष्य भोजन, वस्त्र, मकान, आना-जाना, लेना-देना, बोलना-बताना आदि अनेकों क्रियाओं से अपने मनुष्यपन को सिद्ध करते रहते हैं। परन्तु यह सामान्य व्यवहार सब को अनिवार्य रूप से करना ही पड़ता है। जिस प्रकार से पशुओं में पशुत्व (पशुपन) सब पशुओं में सामान्य रहता है, वे पशु भी सामान्य व्यवहार- खाना-पीना, सोना-उठना आदि करते रहते हैं। यह पशुओं में समान रूप से चलता रहता है, परन्तु कोई पशु विशेष होता है। उसकी विशेष क्रिया से ही वह पशु विशेष माना जाता है। जैसे खोजी कुत्ता, घोड़ा, गाय आदि, पक्षियों में तोता, सरकने वालों में गोधा इत्यादि अनेकों उदाहरण हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में देखना चाहिए कि सभी मनुष्य सामान्य रूप से मनुष्यपन को सिद्ध करते ही हैं परन्तु विशेष क्रियाओं के कारण विशेष मनुष्य बनते हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने ज्ञान के अनुरूप पुरुषार्थ करते हुए अपने मनुष्यपन को स्थिर तो रख ही रहे हैं, किन्तु इतने मात्र से मनुष्य को वह तृप्ति नहीं मिल रही है जिस तृप्ति को मनुष्य चाहते हैं। मनुष्य पूर्ण तृप्ति को चाहते हैं। पूर्ण तृप्ति के लिए मनुष्य को विशेष पुरुषार्थ करना होगा। विशेष पुरुषार्थ विशेष ज्ञान, विशेष कर्म और विशेष उपासना से सम्भव है। यद्यपि संसार में विशेष पुरुषार्थ करने वाले भी अच्छी मात्रा में मिल जाते हैं, परन्तु उनका विशेष पुरुषार्थ एकांगी होता है अर्थात् वे केवल ज्ञान में या केवल कर्म में अथवा केवल उपासना में विशेष पुरुषार्थ करके विशेष तो बनते हैं। विशेष बनकर भी वे पूर्ण तृप्ति से वंचित ही रहते हैं, क्योंकि पूर्ण तृप्ति एकांगी साधन से नहीं मिल पाती है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह ज्ञान के साथ कर्म को और कर्म के साथ उपासना को जोड़ कर तीनों साधनों में पुरुषार्थ करे। ज्ञान की आवश्यकता पड़ने पर ज्ञान को पाने में पुरुषार्थ करे, कर्म करने की आवश्यकता पड़े तो कर्म करने में पुरुषार्थ करे और उपासना की आवश्यकता पड़े तो उपासना करने में पुरुषार्थ करे। तीनों साधनों (ज्ञान, कर्म, उपासना) में समान पुरुषार्थ करता हुआ ही मनुष्य पूर्ण तृप्ति को प्राप्त कर सकता है। पूर्ण तृप्ति को प्राप्त हुआ मनुष्य ही यथार्थता में मनुष्य कहलाता है। ऐसा मनुष्य ही मनुष्यपन को सिद्ध करने में सफल माना जाता है।

मनुष्य तीनों साधनों (ज्ञान, कर्म, उपासना) में समान रूप से पुरुषार्थ कैसे कर सकता है? क्योंकि एक समय में एक ही साधन को अपना सकता है, चाहे ज्ञान को, चाहे कर्म को, चाहे उपासना को अपनाये परन्तु तीनों को एक साथ कैसे अपना सकता है? इसका समाधान यह है कि जिस समय ज्ञानार्जन करना हो, उस समय ज्ञानार्जन में पुरुषार्थ न करके सेवा आदि अन्य कार्यों में समय न बिनाये। जिस समय सेवा आदि कार्य करना हो उस समय ज्ञानार्जन न करे। इसी प्रकार जिस समय उपासना करना हो उस समय सेवा आदि कार्य अथवा ज्ञानार्जन में समय न बिताये। तीनों का समन्वय आवश्यकता के अनुसार ही करे, न कम न अधिक करे। तीनों साधनों को समान रूप से करने का अभिप्राय इसी रूप में लेना चाहिए। ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनों को समान रूप से लेकर चलने वाले भी पूर्ण तृप्ति को प्राप्त करते हुए नहीं दिखते हैं। इसके पीछे अनेक कारण होते हैं। कर्म करने की आवश्यकता पड़ने पर कर्म तो कर रहे हैँ परन्तु सामान्य कर्म ही कर रहे हैं। यहाँ सामान्य कर्म न करके विशेष कर्म (पुण्य, पुण्य में भी राग रहित पुण्य कर्म) करना चाहिए। जहाँ ज्ञान की आवश्यकता पड़े तो ज्ञानार्जन तो कर रहे हैं परन्तु सामान्य ज्ञानार्जन कर रहे हैं। सामान्य ज्ञानार्जन न करके विशेष ज्ञान (विवेक युक्त, वैराग्य युक्त ज्ञान) प्राप्त करना चाहिए। इसी प्रकार उपासना करने की आवश्यकता पड़ने पर उपासना तो कर रहे हैं परन्तु सामान्य उपासना ही कर रहे हैं। सामान्य उपासना न करके एकाग्रता वाली-समाधि वाली

उपासना करनी चाहिए। जब मनुष्य विशेष ज्ञान, विशेष कर्म और विशेष उपासना को आवश्यकता के अनुरूप करता है तब मनुष्य मनुष्यपन को पूर्ण रूप से सिद्ध कर लेता है। विशेष ज्ञान, विशेष कर्म और विशेष उपासना करने के लिए मनुष्य को सदा ईश्वर को और ईश्वरीय वेद को अपने समक्ष रखना होगा। जिससे मनुष्य सदा मनुष्यत्व को बनाये रख सके। मनुष्य ईश्वर आज्ञा का पालन करता हुआ मनुष्यत्व को सदा बनाया रखता है, तो विशेष मनुष्य बन जाता है। विशेष मनुष्य में विशेष मनुष्यत्व होता है, जिसे वेद ने कहा है '**तन्मर्त्यस्य देवत्वम्**' (यजु. ३१.१७) अर्थात् वह विशेष मनुष्य का देवत्व (देवपन) है। मनुष्य में देवत्व आ जाता है, तो मनुष्य जीवन का लक्ष्य सरल हो जाता है।

संसार में सभी मनुष्य देव को आदर से देखते हैं, उनके देवत्व की पूजा भी करते हैं परन्तु स्वयं को देव बनाने में कतराते हैं। देव को अच्छा मानते हुए भी देव बनने में इसलिए कतराते हैं कि पुरुषार्थ करना पड़ता है। पुरुषार्थ से डरते हों ऐसा भी नहीं है, किन्तु अज्ञान-अविद्या के कारण डरते हैं। वे समझते हैं कि यदि देव बनना है, तो संसार में जो अब तक करते आ रहे हैं, वे सब छोड़ना पड़ेगा। इसलिए कतराते हैं, वे यह नहीं समझ पाते हैं कि अनुचित-असत्य, अन्याय-अप्रमाण को ही त्याग करना है इसमें क्या डरना है? क्या हमें पशुवत् बने रहना है यदि नहीं है, तो देव बनने में क्यों कतरा रहे हैं। इस प्रकार विचार करने से सम्भावना है कि एक दिन वे भी देव बनने में नहीं कतरायेंगे। मनुष्य की अन्दर की इच्छा देव बनने में तो होती है, परन्तु बाहर से कतराते रहते हैं। अज्ञान से पर्दा उठा कर देख लेवें तो निश्चित रूप से उत्साह मिलेगा और पुरुषार्थ करने की प्रेरणा भी मिलेगी मनुष्य सदा प्रेरणा लेता रहता है। प्रेरणा राक्षस से और देव से दोनों से लिया जा सकता है। इसलिए मनुष्य को निर्णय करना है कि प्रेरणा किससे लें, यदि देव से लेते हैं तो मनुष्य, मनुष्य होने का प्रमाणित करने में सदा सक्षम रहेगा और यदि राक्षस से लेते हैं, तो मनुष्यत्व से गिर जावेगा। इसका सदा ध्यान रखना पड़ता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य अज्ञान को सदा दूर कर देवत्व को अपनाने में पुरुषार्थ करता रहेगा और अन्त में देव भी बन जायेगा।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आवासिकं संस्कृत-भाषा-शिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम्

लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखाया: परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।

अवधि: - २४-०५-२०१४ त: ३१-०५-२०१४ (अष्ट दिनात्मकम्)
(२३-०५-२०१४ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)

स्थानम् - ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्ग:, अजमेर-३०५००१, दूरभाष:- ०१४५-२६२१२७०

योग्यता - संस्कृते रुचिमन्त: संस्कृत-आचार्या:, अध्यापका:, संस्कृतछात्रा:, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।

शुल्कम् - ३०० रुप्यकाणि।

व्यवस्था - एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
- बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिन: नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्री: च आनयेयु:।

स्वरूपम्- शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
- संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यास:,

विशेष - **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

डॉ. धर्मवीर:
अध्यक्ष:

डॉ. निरञ्जन साहु:
सचिव:
०९४१४७०९४९४, ९८२९१७६४६०

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

महर्षि दयानन्द का मूल्याङ्कन किया गया:- मैं चिन्तन, मन्थन व खोज के लिए पूरा समय देता हूँ और किसी कार्य की ओर ध्यान ही नहीं देता। अकोला विदर्भ से प्रिय श्री राहुल ने महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज का एक पुराना लेख भेजा। इसे पाकर मैंने स्वयं को मालामाल जाना। अपने लेख में गम्भीर धीर मुनि महात्मा नारायण स्वामी जी ने दक्षिण भारत के एक पुराने नेता श्री सी.एस. रंगा अय्यर (सदस्य केन्द्रीय धारा सभा) के एक ग्रन्थ से महर्षि दयानन्द जी महाराज विषयक एक अवतरण उद्धृत किया। नारी उत्थान कल्याण विषयक महर्षि की देन का ऐसा सुन्दर अवतरण कम ही देखने, सुनने व पढ़ने को मिलेगा।

मैं इस ग्रन्थ को पाने के लिये छटपटाने लगा। इस आयु में अतिशीत में भागदौड़ करना सम्भव नहीं। मैंने नवोदित आर्यवीर श्री लक्ष्मण से कहा, यह ग्रन्थ दिल्ली में कहीं तो मिलेगा। यदि आठ-दस दिन तक इसे खोज निकालो तो बहुत बड़ी सेवा होगी। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा ही न रही, जब लक्ष्मण जी ने चौबीस घण्टे में यह ग्रन्थ खोज निकाला। यह लगन का चमत्कार है। इसी को उपलब्धि कहेंगे।

फादर इण्डिया ग्रन्थ में एक से अधिक बार वेदोद्धारक ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की चर्चा की गई है। मैंने पहली बार किसी राजनेता को बार-बार यतिराट् दयानन्द के लिए **ऋषि शब्द का प्रयोग करते पाया है।** इस दृष्टि से भी यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है। आप लिखते हैं-

“The coming of the musleims, whose religion confined women to an inferior place, completed the overthrow of feminine sese. In the nineteenth century Rishi Dayanand Saraswathi, not an english educated man but a sanskrit scholar, came as a messiah to preach the restoration of women to their ancient pedestal glory. Himself a strict brahmchari (celebate), the Sanyashi (monk) took up arms against a sea of social troubles, not the least of which was child marriage. Marriages of girls eleven and twelve are not in practice amongst orthodo arya samajists and other followers of the Rishi who do not label themselves samajists.”[१]

अर्थात् मुसलमानों का मजहब स्त्रियों को निम्न स्थान देता है, उनके आगमन पर स्त्रियों को उनके स्थान से पूर्णतया च्युत कर दिया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती जो अंग्रेजी पठित नहीं थे परन्तु संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे वे मसीह बनकर आये। आपने स्त्रियों को उनके गौरवपूर्ण स्थान पर पुनः प्रतिष्ठित करने का अभियान छेड़ा। वे आप अखण्ड ब्रह्मचारी संन्यासी थे। वे सामाजिक कुरीतियों के लहरे लेते सागर को चीरने के लिए उठ खड़े हुए। इन बुराइयों में बाल विवाह भी कोई छोटी कुरीति नहीं थी। निष्ठावान् दृढ़ आर्यसमाजियों में अब ग्यारह और बारह वर्ष की कन्याओं के विवाह की प्रथा नहीं है। ऋषि के अन्य अनुयायी जिन पर आर्यसमाजी होने का ठप्पा नहीं है, उनमें भी कन्याओं के बाल विवाह की बुराई नहीं है।

ध्यान दीजिये कि इस अवतरण में वेदज्ञ दयानन्द को दो बार ऋषि माना गया है। ऋषि के ब्रह्मचर्य तथा संस्कृत के अथाह ज्ञान की भी प्रशंसा की गई है।

ओडिशा के प्रबुद्ध युवा वैज्ञानिक का प्रश्न:- परोपकारी के एक प्रबुद्ध पाठक, युवा वैज्ञानिक से प्रि. रोशनलाल जी आर्य महेन्द्रगढ़ क्षेत्र में चलभाष पर लम्बी धर्म चर्चा शंका समाधान करवाया। रोशनलाल जी ऋषि मेला पर आते ही हैं। श्री विक्रमसिंह नाम के युवा वैज्ञानिक मूलतः हरियाणा के हैं और स्वाध्यायशील दृढ़ आर्य हैं। आपने एक ऐसा गम्भीर प्रश्न भेजा जिसका उत्तर देते हुए मैंने कहा कि कोई सूक्ष्म बुद्धि वाला विचारक ही यह प्रश्न कर सकता है। यह शंका किसी सामान्य व्यक्ति की नहीं हो सकती। इस पर रोशनलाल जी ने कहा, ''क्या मैं उस से आपकी बात करवाऊँ?''

मैंने कहा, ''ऐसी ऊहा वाले से वार्तालाप करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष होगा। श्री विक्रमसिंह का प्रश्न था कि यदि सब जीव मुक्ति को प्राप्त कर लें तो फिर परमात्मा क्या करेगा? मैंने श्री पं. रामचन्द्र जी देहलवी तथा पं. चमूपति जी आदि मूर्धन्य द्वारा दिये गये उत्तर देते हुए कहा कि द्वार बन्द किया जावेगा तो एकदम नहीं होगा। बन्द होते-होते कुछ खुला रहेगा। ऐसे ही जब खुलेगा तो कुछ-कुछ बन्द रहेगा। जब प्रलय होती है तब साथ के साथ प्रकृति नवीन ऊर्जा प्राप्त करती है जिससे फिर सृष्टि होती है। आकाश में,

जल में भी जीव हैं। मानव देह में ही मुक्ति मिल सकती है और बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं। यह प्रश्न एक सम्भावना मात्र है। मानवेतर करोड़ों जीवों को भोग देने वाला और द्रष्टा प्रभु के लिए यह सोचना कि वह फिर क्या करेगा- यह एक बौद्धिक व्यायाम के सिवा कुछ भी नहीं। खेतों को ऊर्जा प्राप्ति के लिए जब किसान उसमें कृषि नहीं करता तब खेत को ऊर्जा देने की प्रक्रिया ईश्वर ही के द्वारा संचालित होती है। विस्तृत ब्रह्माण्ड में क्या यह कोई साधारण काम है? यह सदैव चलता रहता है। ईश्वर वह है जो जन्म देता है, पालन करता है और प्रलय करता है। लोक लोकान्तर कई हैं और ये तीनों क्रियायें चलती रहती हैं। अंकुर निकला। यह बीज का जन्म है। पत्ते, फूल, फल आने लगे। इन्हें पालन कहो या कुछ और। पत्ते, फूल, फल झड़ने लगे, सड़ने लगे। इसे प्रलय का रूप समझो। इस प्रकार लोक-लोकान्तरों में सृजन का, पालन का और प्रलय का कार्य चलता ही रहता है। ईश्वर क्या करेगा? यह व्यर्थ की चिन्ता है। ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव अनादि हैं और नित्य हैं। यह आर्ष कथन वैदिक दर्शन और ज्ञान-विज्ञान की बात है। हर्ष का विषय है कि श्री विक्रम सिंह जी ने कहा कि मैं सारा जीवन समाज सेवा में लगाऊँगा। आप ऋषि मेला पर भी आयेंगे। बड़े-बड़े विद्वानों से आपको बहुत कुछ प्राप्त होगा। सब आर्यों को युवकों को खींचना चाहिए। ऐसे युवक जो अखण्ड निष्ठा से निरन्तर धर्म प्रचार की सोचें।

श्री दयालमुनि जी का सम्मान:- गुजरात के आर्यों ने श्रीमान् दयालमुनि जी की सेवाओं के लिए उनका बहुत बड़ा सम्मान किया है। यह सम्मान आपने माँग कर नहीं लिया। गुजरात के आर्यों ने आपको छ: लाख की राशि भी भेंट की। आप ने उसमें एक लाख की राशि और मिलाकर सात लाख रोजड़ वानप्रस्थ आश्रम को दान कर दिये। दयालमुनि जी आर्यसमाज के उन विद्वानों में से हैं जो सम्मान पुरस्कार माँग कर नहीं लेते। दान देना भी जानते हैं। इस अवसर पर कथनी करनी के धनी, निरन्तर सेवारत श्री दयालमुनि जी को हम भी नमन करते हैं। गुजरात के आर्यों को इस सत्कर्म पर बधाई भेंट करते हैं। ऋषि के वेदभाष्य आदि को गुजराती में देकर दयालमुनि जी तो अमर हो ही गये। नई पीढ़ी उनके पुरुषार्थ तथा विनम्रता से प्रेरणा प्राप्त करे।

ऋषि जीवन में नाम की एक भूल:- परोपकारी में कभी लिखा था कि नाम की सदृश्यता से कभी-कभी बहुत अनुभवी पत्रकार, इतिहासकार तथा जीवनी लेखक भी भूल कर देते हैं। जन साधारण से तो ऐसी भूल होती ही रहती है। श्रीमान् कुशलदेव जी के ऋषि जीवन पर ग्रन्थ का पहला भाग छपा तो राघव भाई जी ने उन्हें फिर मुझे भी बताया कि मूलजी ठाकरसी तथा ठाकरसी मूलजी नाम के दो गुजराती आर्यसमाजियों के नाम की सादृश्यता से उनके ग्रन्थ में एक भूल हो गई है। दोनों में से एक अविवाहित ही रहा था। कुशलदेव जी ने विवाहित की सन्तति को अविवाहित की वंशावली में दिखा दिया। तब मैंने लिखा था कि यह भूल गुजराती लेखक भी करते चले आये हैं। मुझसे भी यह भूल हो सकती थी।

ऋषि जीवन पर कार्य करते हुए मैंने नामों की शुद्धता के लिए बड़ी सावधानी तथा सतर्कता दिखाई। सम्भवता मेरे द्वारा सम्पादित ऋषि जीवन में नामों की अधिकतम शुद्धता मिलेगी परन्तु ग्रन्थ छप जाने के पश्चात् ग्रन्थ के दूसरे भाग में पृष्ठ २६८ की पाद टिप्पणी को देखा तो पं. श्रीगोपाल तथा पं. गोपाल शास्त्री को पृथक्-पृथक् (दो व्यक्ति) बताकर भी यहाँ पर उन्हें एक ही दिखा दिया गया है। अन्तिम पैरा के उपशीर्षक में भी श्रीगोपाल छप गया। इस पृष्ठ पर चर्चा दोनों की है। इस भूल का मुझे बहुत खेद है। इसका कारण यह रहा कि एक उर्दू पुस्तक में जम्मू के गोपाल शास्त्री जी के साथ आदर सूचक शब्द श्री लगा देखकर मैंने विद्याप्रकाशक मासिक उर्दू पत्र में उनका एक स्पष्टीकरण पढ़कर मैंने इसे पं. श्रीगोपाल जी मेरठ का वक्तव्य समझने की भूल कर दी। वैसे ग्रन्थ में दोनों को पृथक्-पृथक् ही बताया गया है।

ये दोनों महानुभाव पौराणिक थे। दोनों ऋषि के विरोध में रहे परन्तु दोनों का हृदय बदल गया। श्रीगोपाल शास्त्री ने अपने ग्रन्थ में ऋषि की भूरि-भूरि प्रशंसा की। पं. गोपाल शास्त्री जम्मू ने पं. श्रद्धाराम का साथ देकर ऋषि का विरोध करने पर पश्चाताप किया। उसने श्रद्धाराम के षड्यन्त्र की 'विद्याप्रकाशक' में निन्दा की। उसे श्रद्धाराम से घृणा हो गई। इसलिये 'श्रद्धाराम की बनावट' शीर्षक से विद्याप्रकाशक में अपना वक्तव्य छपवाया। ऋषि के जीवन काल में छपे विद्याप्रकाशक का यह दुर्लभ अंक मेरे पास है। इसे शीघ्र परोपकारिणी सभा को सौंप दिया जावेगा।

जम्मू वाले पं. गोपाल शास्त्री जी से पं. लेखराम जी ने भेंट करके कुम्भ मेले की घटनाओं पर उनके विचार पूछे। तब पं. गोपाल शास्त्री ने अपने मनोभाव व्यक्त करते हुए ऋषि का विरोध करने के लिए निन्दनीय करतूतें करने वालों के निम्नस्तर की घोर निन्दा की।

क्या मैं आर्यसमाज के नवोदित लेखकों से यह आशा कर सकता हूँ कि लक्ष्मण जी लिखित ऋषि जीवन की पाद टिप्पणियों तथा परिशिष्टों में पुष्कल दी गई नई जानकारी

का लाभ उठाकर ऋषि के विरोधियों के हृदय परिवर्तन तथा पश्चात्ताप की सामग्री को इकट्ठा करके एक अलग पुस्तक तैयार करें। इस ग्रन्थ में विरोधियों के हृदय परिवर्तन के प्रमाण भी साथ-साथ दे दिये गये हैं। कोई लाभ तो उठाये।

परोपकारी परिवार के प्रतिष्ठित सदस्यः- काल का कुप्रभाव आर्यसमाज के संगठन तथा प्रचार पर भी पड़ा है, यह तो सत्य है परन्तु अब भी आर्यसमाज की शक्ति तथा विलक्षणता का पूरा लाभ हम नहीं उठा पा रहे हैं। हम आर्यसमाज का स्वयं ही अवमूल्यन करते हैं। इसके गौरव की बात कम करते हैं। क्या आर्यसमाज में कभी किसी ने डॉ. वसन्त जी फाजिल्का की चर्चा की है? आप भारत में प्रसिद्ध जाने-माने वैद्य हैं। बड़े-बड़े नेताओं के आप चिकित्सक रहे हैं। देश के अनेक विश्वविद्यालयों तथा आयुर्वेदिक संस्थानों से अब भी जुड़े हुए हैं। अब तो फाजिल्का में ही निवास करते हैं। परोपकारी के नियमित तथा पुराने पाठक हैं। आप एक तपस्वी आर्य पुरुष स्वाधीनता सेनानी लाला सुनामराय जी के दामाद हैं। दो बार तड़प-झड़प तथा मेरे एक गीत को पढ़कर अपने पत्रों में अपना परिचय दिया तो मैंने उन्हें बताया कि मैं तो आपके पूरे परिवार को जानता हूँ। आपकी पत्नी भी हमारे यहाँ एक बार आई थीं। जिस आर्यसमाज में देश का ऐसा रत्न और ऊँचा विद्वान् हो हम आर्यसमाज की वेदी पर अपने उस सपूत को देश के सामने न ला सके। अब वह ८८ वर्ष के हैं तथापि मैं प्रयास करूँगा कि वह अगले ऋषि मेला पर अजमेर पधारें।

इस बार पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार डॉ. रमेशदत्त जी मिश्रा को दिया गया। आप संस्कृत तथा हिन्दी के ऊँचे कवि हैं। ऋषि दर्शन के अधिकारी विद्वान् हैं। पहले जब अजमेर आये थे तो भाषण नहीं देते थे। अब वह व्याख्यान देते हैं। जब ईसाईमत तज कर आर्य धर्म ग्रहण किया मेरा तभी से उनके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। आपने मुझे विश्वास दिलाया है कि मैं आजीवन जी जान से ऋषि मिशन की सेवा करूँगा।

परतवाड़ा महाराष्ट्र का आर्य युवक शिविरः- प्रत्येक आर्यसमाज को परतवाड़ा आर्यसमाज के श्री पंकज जी, श्री मोहन जी के परिवार की कर्मण्यता व समाज सेवा का अनुकरण करना चाहिए। पूरा वर्ष यह समाज नये-नये ठोस कार्य करता रहता है। दैनिक सत्संग दिल्ली, अमृतसर, जालन्धर की समाजों से अच्छे होते हैं। युवकों के शिविर, शंका समाधान, पारिवारिक सत्संग, श्रद्धानन्द सेवा केन्द्र (तीन), योग शिविर, साहित्य वितरण बहुत कुछ यह समाज करता है। परोपकारिणी सभा के विद्वान् आचार्य कर्मवीर जी, आचार्य सोमदेव जी, डॉ. धर्मवीर जी, मान्य सत्येन्द्र जी आर्य आदि समय-समय पर जाकर इस प्यारी वाटिका को सींचते हैं। अभी जनवरी मास में आचार्य कर्मवीर जी के मार्गदर्शन में युवकों का एक प्रभावशाली सफल शिविर सम्पन्न हुआ है। श्री राहुल जी अकोला से पूरा सहयोग करते हैं।

क्या खोया? क्या पाया?:- इस्लाम के नामलेवा एक भ्रमित भाई बार-बार यही रट लगा कर पूछते हैं कि ऋषि दयानन्द या आर्यसमाज ने क्या खोया और क्या पाया? सुनिये मित्रो! कुछ पाने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है। आर्यसमाज के संस्थापक ने सब सुख साज वारा, सब कुछ खोया। जीवन तक दे दिया। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, श्याम भाई, शिवचन्द्र जैसे कई तपस्वी, त्यागी, परम पुरुषार्थी सद्धर्म वेद की रक्षा के लिए वार दिये। बहुत कुछ खोकर पाया क्या? यह प्रश्न अच्छा है। ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज से मत पन्थों ने बहुत कुछ पाया। इस्लाम ने तो विशेष रूप से ऋषि से इतना कुछ पाया है कि पूरा लेखा जोखा करना कोई छोटा कार्य नहीं। लीजिये कुछ बताये देते हैं:-

१. कुरान के प्रसिद्ध अनुवाद फतह उलहमीद में लिखा है, ''आजकल मुसलमान जो खुदा को भी मानते हैं तथा साथ ही कबर परस्ती, पीर परस्ती तथा ताजिया भी करते हैं।'' अनुवाद लिखता है, यह भी ईश्वरेतर (शिरक) पूजा है।''[१] क्यों जी यह बोध किसने करवाया? यह कुल्लियाते आर्य मुसाफिर से लिये गये शब्द हैं अथवा नहीं? आपको सन्मार्ग दर्शन हो गया। यही हमने पाया। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

२. पहले मुसलमान गाया करते थेः-

जो मुहम्मद की जलवा नुमाई न होती।
तो हरगिज खुदा की खुदाई न होती।।

अब कुरान की आयत आपने खोज ली। यह मान लिया, ''पहले सब लोगों का एक ही मजहब था।''[२] "Mankind was [OF] one religion [before their deviation][३] अर्थात् (विचलित होने से पूर्व) मानव मात्र का एक ही धर्म था।'' कहिये प्यारे मियाँ जी इन अर्थों के साथ यह आयत किसने सुझाई बताई?

३. एक फरिश्ता जो आयतें नाज़िल करता था उसके कुरान के भाष्यकार ने छह सौ पंख लिखे हैं। छह सौ पंखों वाला तो संसार में कोई पक्षी भी नहीं मिलता। अब आप लोग फरिश्ता का अर्थ देवता विद्वान् लिख रहे हैं। सोच इतनी कैसे बदल गई? बस ऋषि ने यही तो पाया कि आपका भला हो गया। आपको बुद्धि मिल गई।

शेष भाग अगले अंक में.....

पं. (मौलवी) महेश प्रसाद जी- एक परिचय

- श्रीमती कला श्रीवास्तव

मेरे पिता जी परिवार के सदस्यों के बीच बाबू जी तथा बाहर मौलवी साहब के नाम से माने जाने जाते थे। उनका जन्म फतेहपुर कायस्थान (इलाहाबाद) में १७ नवम्बर १८९० को हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू गौरी शंकर था। हाईस्कूल तक उनकी शिक्षा ए०पी० मिशन हाईस्कूल, इलाहाबाद में हुई थी उन्होंने पाँच वर्ष तक अध्ययन किया और १९११ में हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। वे एक मेधावी छात्र थे।

मैट्रिक पास करने के पश्चात् उनका विचार पुलिस विभाग में थानेदार बनने का था, किन्तु इसी बीच उन्हें ज्ञात हुआ कि आगरा में पं० भोजदत्त शर्मा ने धर्मवीर पं. लेखराम की स्मृति में मुसाफिर विद्यालय खोला है। फलत: १९१३ की पहली सितम्बर को थानेदार बनने का विचार छोड़ कर वे मुसाफिर विद्यालय में प्रविष्ट हो गये। दो वर्ष अध्ययन करने के पश्चात् १९१५ में वे इसी विद्यालय में अध्यापक बने। इसी वर्ष राहुल सांस्कृत्यायन (उस समय के केदारनाथ पाण्डेय)ने भी विद्यालय में प्रवेश लिया। राहुल जी तथा बाबू जी का आजीवन घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। राहुल जी की ही प्रेरणा से उच्च स्तरीय अरबी अध्ययन के लिए वे लाहौर चले गये तथा ओरयिंटल कालेज की मौलवी कक्षा में प्रवेश लिया। इस कक्षा में प्रवेश लेने वाले वे पहले हिन्दू विद्यार्थी थे तथा पंजाब विश्वविद्यालय की अरबी की सर्वोच्च परीक्षा मौलवी फाजिल की उत्तीर्ण करने वाले भी वे प्रथम हिन्दू छात्र थे। राहुल जी के शब्दों में जिस समय आर्यसमाज और मुसलमानों में बहुत सौहार्द नहीं था उस समय भी मोटी चुटिया नंगे सिर पर धारण किये और खादी का मोटा कुर्ता और धोती पहने महेश प्रसाद मुसलमानी वातावरण से प्रभावित आलिम कक्षा मे कभी उपहास और अनादर के पात्र नहीं बने। शायद धार्मिक मतभेद होने पर भी धार्मिक सहिष्णुता इस युग में आज की अपेक्षा कहीं अधिक थी, जबकि आज धर्म निरपेक्षता का ढोल सबसे अधिक पीटा जाता है।

जब १९२० में पंडित मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उर्दू-फारसी विभाग खोलना चाहा तो उनको ऐसे हिन्दू की तलाश थी जो उर्दू-फारसी पढ़ा सके। जब उनको पता लगा कि इलाहाबाद जनपद का एक अध्यापक लाहौर ओरियन्टल कालेज में पढ़ा रहा है तो वह वहाँ गये और मेरे पिता जी से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ाने के लिये कहा। मालवीय के आग्रह पर उन्होंने १९२० में प्रवक्ता उर्दू-फारसी के रूप में पढ़ाना प्रारम्भ किया। आगे चलकर जब वहाँ अरबी का अध्ययन प्रारम्भ किया गया तब वे वहाँ पर उर्दू, फारसी, अरबी विभाग के अध्यक्ष बनाये गये, जहाँ वे अपने जीवन-पर्यन्त अर्थात् २९ अगस्त १९५१तक कार्यरत रहे।

उन्होंने अपना अवशिष्ट जीवन विश्वविद्यालय की सेवा तथा आर्य-समाज के प्रचार में लगाया। आपकी पुत्री सुश्री कल्याणी देवी ने जब वेद तथा पौरोहित्य का पाठ्यक्रम लेकर विश्वविद्यालय में प्रवेश लेना चाहा था तो उक्त विद्यालय के पुराणपन्थी दाक्षिणात्य अध्यक्ष ने एक अब्राह्मण (कायस्थ) कन्या और वह भी नारी को वेद विद्यालय में प्रवेश देना अस्वीकार कर दिया। इस पर आर्य समाज में बड़ा भारी आन्दोलन हुआ। आर्य समाज के विद्वानों ने विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय जी से भेंट कर कल्याणी देवी को प्रविष्ट करने का औचित्य समझाते हुए स्त्रियों के वेदाधिकार का शास्त्रीय निरूपण किया तथा पुराणपन्थी आचार्य को शास्त्रार्थ के लिए आहूत किया। मालवीय जी के हस्तक्षेप से अन्तत: कल्याणी देवी को वेद तथा वैदिक कर्मकाण्ड की कक्षा में प्रवेश मिल गया। **(उस समय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् थे। -सम्पादक)**

मेरी माता जी का स्वर्गवास १९३७ में हो गया था। उनके चार पुत्रियाँ थीं। चारों पुत्रियों में मैं सबसे छोटी हूँ। अन्य तीन कल्याणी,प्रेमा और शारदा अब संसार में नहीं रहीं। पिता जी कट्टर आर्य समाजी थे। इसी कारण अपनी पुत्रियों को उन्होंने आर्य संस्कृति से युक्त गुरुकुल मे प्रारम्भिक शिक्षा दिलायी, बाद में अस्वस्थ रहने के कारण वापस बुलाना पड़ा। अपने परिवार तथा गाँव से उनको बहुत लगाव था। परिवार एवं गाँव की उन्नति और विकास के लिए वे जीवन पर्यन्त कुछ न कुछ करते रहे।

वे उर्दू, फारसी, अरबी, हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी के विद्वान थे। मिर्जा गालिब पर उनका विशेष अध्ययन था। अपने विषय के अतिरिक्त धर्म, संस्कृति, समाज-

सुधार-सम्बन्धी उनकी अनेक रचनायें उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो गयी थीं। उनमें से कुछ का विशेष उल्लेख किया जा सकता है--

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती
२. महर्षि जीवन-दर्शक
३. महर्षि दयानन्द कहाँ और कब
४. दयानन्द काल में रेल मार्ग
५. महर्षि का अपूर्व भ्रमण
६. श्री सर सैयद अहमद खाँ और श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती
७. स्वामी दयानन्द और कुरान
८. गाय और कुरान
९. बकराईद
१०. अमर सत्यार्थ प्रकाश
११. सत्यार्थ प्रकाश का विचार
१२. विद्या मन्दिर (बच्चों के लिए)
१३. मनोरंजक हिसाब (बच्चों के लिए)
१४. भारत में ईसाई
१५. इस्लामी त्योहार और उत्सव
१६. सत्यार्थ प्रकाश की व्यापकता
१७. मेरी ईरान यात्रा।

इन पुस्तकों के अतिरिक्त अनेक दर्जनों खोजपूर्ण लेख उनके समय की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे, जैसे आर्यसनातन धर्म, जागरण सरस्वती, भारती, माधुरी, हिन्दी प्रचार, सहेली आदि। नीचे उनके कुछ प्रकाशित लेखों का उल्लेख किया जा रहा है-

१. 'बगदाद में संस्कृति व भारतवासी' सरस्वती, फरवरी, १९१९
२. 'भारतीय इतिहास विषयक अरबी ग्रन्थ' सरस्वती, मार्च, १९२१
३. 'ईरान का गोभक्त बादशाह' सरस्वती, जुलाई, १९२२
४. 'फारसी में उपनिषद्' सरस्वती, मार्च, १९२३
५. 'उर्दू का व्याकरण' सरस्वती, मई, १९२४
६. 'नौसारी और पारसी' सरस्वती, जनवरी, १९२८
७. 'फारसी में भागवत' सरस्वती, दिसम्बर, १९३५
८. 'मदह सहाबा व तबर्रा' आर्य, अगस्त१९३९
९. 'ईरान में नाटक' जागरण, फरवरी, १९३२
१०. 'इस्लामी दुनिया' सनातन धर्म, जुलाई,१९३३
११. 'कुरान और स्त्रियाँ' सहेली, नवम्बर, १९३१

उनके सभी लेख एवं पुस्तकें उनके द्वारा किए गए खोजपूर्ण अध्ययन पर आधारित थे। शोध की दृष्टि से आज भी उनका विशेष महत्त्व है। उर्दू, फारसी, अरबी की उनकी रचनायें विशेषकर गालिब से सम्बन्धित लेख गालिब के मौलिक पत्रों के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के एक अध्यापक श्री सिद्दीकी साहब को दे दिये गये थे, जिन्हें उन्होंने दिल्ली की गालिब एकेडमी को पहुँचा दिया था।

उनके द्वारा किए गए अन्य विशेष कार्यों का विवरण निम्नवत् हैं:-

(क) आर्य समाज के कार्यों के सम्बन्ध में पूरे देश विशेषकर उत्तर भारत के प्रमुख स्थानों की यात्रा।
(ख) ईरान की यात्रा १९२९।
(ग) विभिन्न विश्वविद्यालयों की समितियों के सदस्य।
(घ) गालिब पर विशेष कार्य।
(च) इनके द्वारा रचित पुस्तकें विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में रखी गयी थीं।
(छ) सामाजिक बुराइयों को दूर करने व हिन्दी के प्रचार आदि में विशेष रुचि ली।

(ज) अपनी सबसे बड़ी पुत्री कल्याणी देवी के वेद पढ़ाने के प्रश्न पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के अधिकारियों से, जो स्त्रियों के वेद अध्ययन के विरुद्ध थे, बड़ा संघर्ष किया। महात्मना मालवीय जी के पास भी वे कल्याणी के साथ गये, उन्होंने सहमति और आशीर्वाद भी दिया। अन्त में विश्वविद्यालय को उनकी लड़की को वेद अध्ययन की अनुमति देनी पड़ी और उसके लिए विश्वविद्यालय में समुचित व्यवस्था की गयी। १९४७-४८ में पूरे देश में यह संघर्ष चर्चा का विषय रहा और देश के कई प्रमुख दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों में उनके साहस और निष्ठा की सराहना की।

उनके पास उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत, हिन्दी की पुस्तकों का अच्छा खासा संग्रह था। उनका अपना पुस्तकालय था, जिसे समझने की क्षमता हममें नहीं थी। वे सब वाराणसी चौक में स्थित कारमाइकेल लायब्रेरी जिसके वे स्थायी सदस्य थे, को दे दी गयी थी।

बाबू जी की बहुत सी अप्रकाशित रचनायें अब भी मेरे पास सुरक्षित हैं जिन्हें भविष्य में प्रकाशित करने का विचार है।

- १३७९, विवेकानन्द नगर, सुल्तानपुर, उ.प्र.

कौन हैं हम भारतवासी?

– ज्ञानेन्द्र मिश्र

भारतीय भू-भाग पर १२० करोड़ से ऊपर लोग रहते हैं। इसमें लगभग सभी धर्मों को मानने वाले भिन्न-भिन्न भाषायी समुदायों के साथ-साथ आदिवासी भी हैं आदिवासियों में अभी भी कुछ ऐसे समूह हैं जो प्राचीनतम जीवन शैली में ही रहते हैं। हमारी पारम्परिक इतिहास की किताबें हमारे आदि इतिहास के बारे में विस्तारपूर्वक नहीं बताती वरन् उनकी शुरूआत सिंधु घाटी सभ्यता से होती है, जो मूलतः नगरीय सभ्यता थी। पारम्परिक इतिहास यह बताता है कि मध्य एशिया से आये आर्यों ने सिंधु घाटी सभ्यता को नष्ट कर दिया और वैदिक सभ्यता शुरूआत की। घुड़सवार,रथ चालक व सोम रस सेवन करने वाले आर्यों ने हमारी आज की सभ्यता की नींव रखी। आर्यों के प्रमुख ग्रन्थ वेद माने जाते हैं जो वैदिक संस्कृत में लिखे गये हैं । संस्कृत एक बहुत बड़े भाषायी परिवार, भारतीय यूरोपीय भाषा परिवार की सदस्य है जो अधिकांश यूरोप एवं दक्षिणी एशिया में बोली जाती है। मिथक है कि आर्यों ने तत्कालीन उत्तर भारतीय लोगों को दक्षिण भारत की ओर धकेल दिया जो शायद भारत के मूल निवासी थे।

भाषायी दृष्टिकोण से भारत में चार प्रमुख भाषा परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं। उत्तर भारत में भारतीय यूरोपीय परिवार की भाषाएँ, दक्षिण भारत में द्रविड़ भाषाएँ, उत्तरी पूर्वी भूभाग में ऑस्ट्रो एशियाटिक तथा चीनी तिब्बती परिवार की भाषाएँ, तिब्बती बर्मी भाषाएँ।

भारतीय यूरोपीय भाषा परिवार के चार प्रमुख उप समुदायों जर्मनिक (जर्मन, डच,अंग्रेजी,आईसलैछिक ,नार्वेजियन, डेनिस, स्वीडिश, बेन्डाल, गोथिक इत्यादि) रोमनिक, साल्विक (रूसी,पोलिस, चेक, बुल्गारी इत्यादि) तथा भारतीय ईरानी परिवार (अवेस्ता, प्राचीन पारसी, फारसी, वैदिक संस्कृत,संस्कृत, पाली, प्राकृत हिन्दी, मराठी, बांग्ला, गुजराती सिंहल इत्यादि) की भाषाएँ अधिक सफल रही हैं। भारतीय यूरोपीयन भाषा परिवार के जन्म को कभी घोड़ों को पालतू बनाने वाले एवं पहियों की जानकारी रखने वाले घुमन्तू लोगों से जोड़ा जाता है तो कभी अनातोलिया के आदि किसानों से, इन भाषाओं के विस्तार को देखते हुए इनकी उत्पत्ति के बारे में विवाद एवं अन्वेषण जारी है। द्रविड़ भाषा परिवार में लगभग २३ भाषाएँ शामिल हैं जिनमें तेलगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम, गोन्डी, तुलु एवं कुरूख प्रमुख हैं। ये भाषाएँ मूलतः दक्षिणी भारत में बोली जाती हैं। द्रविड़ भाषाएँ कुछ विद्वानों द्वारा भारतीय मानी गयी हैं तो कोई उन्हें सिन्धु घाटी की भाषा से जोड़ता है तथा कभी उन्हें हंगेरियन और तुर्क मंगोल भाषाओं से सम्बन्धित बताया जाता है।

चूंकि भारतीय यूरोपीय समुदाय की भाषाएँ यूरोपीय भाषाओं से मिलती हैं तो भाषायी आधार पर यह माना जाता रहा है कि यूरोपीय तथा भारतीय पूर्वज कभी न कभी एक दूसरे के सम्पर्क में रहे हैं तथा भारतीय समुदाय का एक हिस्सा आर्यों के आगमन से जुड़ा हुआ है। इसी तरह द्रविड़ भाषा पाकिस्तान के एक छोटे से समुदाय में भी बोली जाती है। ऐसा अनुमान किया जाता रहा है कि द्रविड़ लोग भारत के मूल निवासी थे तथा वो भी ईरान होकर भारत आए थे। आर्यों के आगमनपर वे दक्षिण भारत तक सिमट गए।

आज ऐसा माना जाता है कि आधुनिक मानव (वैज्ञानिक नाम होमो सेपियन्स सैपियन्स)का विकास लगभग १६००००से २०००००वर्ष पूर्व तत्कालिक होमो इरेक्टस से अफ्रीकी महाद्वीप में एक छोटे से समुदाय में हुआ था। यहीं से सारी दुनिया में मानव जाति फैलती गई। इन्होंने होमो इरेक्टस तथा होमो नियन्डरथल को धीरे-धीरे समाप्त करते हुए पूरी दुनिया में अपना प्रभुत्व बना लिया । पहले यह माना जाता था कि आधुनिक मान का विकास अलग-अलग कई जगहों पर हुआ होगा और धीरे-धीरे इन फैलती हुई प्रजातियों में आपसी सम्पर्क एवं सम्बन्ध ने आधुनिक मानव जाति की नींव रखी। अर्थात् जो मुख्य सभ्यतायें हैं उनके जनक अलग-अलग रहे होंगे।

आज से लगभग कई वर्ष पूर्व १९८७ में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एन विलसन एवं साथी वैज्ञानिकों ने पहली बार पांच भिन्न-भिन्न जनसंख्याओं से चुने हुए १४७ लोगों के माइट्रोकॉन्ड्रिया में स्थित डी.एन.ए. का अध्ययन किया जिससे आनुवंशिक प्रमाणों की शुरूआत हुई।

इतिहास की महागाथा कि हम सब अपने शरीर में अरबों कोशिकाओं को संजोये हुए हैं को अब वैज्ञानिकों द्वारा धीरे-धीरे परत दर परत समझा जा रहा है। इस महागाथा में हमारे पूर्वजों की निशानदेही, उनके परिश्रम एवं संघर्षों की महान गाथा छुपी हुई है। यह महागाथा समय की सीमाओं के अन्दर दूर-दूर तक प्रवेश कर सकती है तथा मानव विकास के बहुत से अनछुए पहलुओं को रेखांकित करती है। यह सर्वविदित है कि मानव भ्रूण, जिसके लगातार

विभाजन से सम्पूर्ण मानव शरीर बना है, माता की अंड कोशिका एवं पिता के शुक्राणु से मिलकर बनता है। वस्तुत:भ्रूण से सम्पूर्ण शरीर के विकास एवं उसके आगे की अवस्थाओं के निर्देश विशालकाय डी.एन.ए. में तीन अक्षरों वाली कूट भाषा में लिखी होती है। ये विशालकाय अणु गुणसूत्रों का निर्माण करते हैं जो कोशिका के केन्द्रक में संजोये रहते हैं। मानव में २३ जो गुणसूत्र होते हैं। तेईसवाँ जोड़ा नर एवं नारी में अलग तरह का होता है। नर में Yगुणसूत्र होता है जबकि नारी में बाकी २२ जोड़ों की तरह Xगुणसूत्र ही होता है। भ्रूण से नर का विकास होगा या नारी का, यह YX गुणसूत्र पर निर्भर करता है। यदि इसमे Y गुणसूत्र होगा तो नर का विकास होगा। यदि यह नहीं होगा तो मादा का विकास होगा। इस तरह पिता से पुत्र में Y गुणसूत्र की जाने की प्रक्रिया अनादि काल से चलती आ रही है।

भ्रूणमें केन्द्रक के अलावा सारी संरचनाएँ प्रमुखत: माता की अण्ड कोशिका से आती हैं। इसमें माइट्रोकॉन्ड्रिया नामक अवयव में भी डी.एन.ए. अणु होते हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी माता से पुत्री को दिए जाते हैं। यह प्रक्रिया भी अनादि काल से चली आ रही है। सामान्य कोशिका के विभाजन के दौरान गुणसूत्रों के नये सेट बनते हैं। अर्थात् मूल प्रतिलिपि की अन्य प्रतियाँ बनाई जाती हैं। इनके प्रतिलिपि बनाने की प्रक्रिया तकनीकी रूप से इतनी उत्कृष्ट होती है कि इनकी प्रतिलिपि बनने में किसी गलती की संभावना नगण्य होती है। पर कभी-कभी प्रतिलिपि बनते समय किसी अक्षर की गलती हो जाती है। वैज्ञानिक इसे उत्परिवर्तन कहते हैं। समय के लम्बे अंतराल में इस तरह के उत्परिवर्तन होते रहते हैं, इनका समय के सापेक्ष सम्बन्ध बिठाया जा सकता है। इसे ऐसे समझिये जैसे १००० वर्ष में लगभग एक उत्परिवर्तन हो, तो यदि किसी समुदाय के गुणसूत्र में १० उत्परिवर्तन हैं तो उसकी उम्र १०००० वर्ष पुरानी होगी। अधिक उत्परिवर्तन अर्थात् अधिक विभिन्नताएँ। इस तरह वैज्ञानिक किसी समुदाय में इन विभिन्नताओं के आधार पर प्राचीनता का अनुमान लगा सकते हैं।

अब हैप्लोग्रुप या समूह की बात करते हैं। ऐसा माना जा सकता है कि डी.एन.ए. का विशाल अणु एक तिलिस्मी किताब की तरह है जिसके स्वाभाविक रूप से विभाजन एवं पुन: संरचना के दौरान अक्षरों के परिवर्तन होते रहते हैं। इन उत्परिवर्तनों को पहचान चिन्ह के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

अब किसी ऐसी किताब में पृष्ठ १० पर वर्तनी की गलती से क की जगह ख लिखा गया है। अब यह किताब पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है तो जिन-जिन समुदायों के पास यह किताब है और सभी में पृष्ठ १० पर क की जगह ख लिखा है तो ये लोग कहीं भी रहें वे एक ही परिवार, अर्थात् माँ या पिता के वंशज हैं। अब मान लीजिए ५० पीढ़ी बाद एक दूसरी गलती पृष्ठ १५ पर हो जाती है। यदि परिवर्तित किताब लगातार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जाती रहेगी और इन परिवर्तनों के आधार पर आसानी से समुदायों के सम्बन्ध स्थापित किए जा सकते हैं तो इन स्पष्ट वर्तनी की गलतियों को वैज्ञानिक हैप्लोग्रुप का नाम देते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम पृष्ठ १० की गलती को L 3 समूह(L 3 हैप्लोग्रुप)का नाम दें तथा पृष्ठ १५ की गलती को Mसमूह का नाम दें, तथा किसी समुदाय में L 3 तथा M मिले तो यह स्पष्ट है कि M समूह L 3 समूह से उत्पन्न हुआ है और L 3 समूह के लोग अधिक प्राचीन हैं।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि माइट्रोकॉन्ड्रिया का डी.एन.ए. सिर्फ माता से पुत्री को प्राप्त होता है। इनके हैप्लोग्रुप समूह का अध्ययन कर पुत्री से माता, माता से नानी, नानी से परनानी अर्थात् मातृ पक्ष से समुदायों के सम्बन्ध प्रमाणिक रूप से स्थापित किए जा रहे हैं। उत्परिवर्तनों के आधार पर समय के साथ उनके उत्पन्न होने का समय निर्धारित किया जा रहा है। इससे कौन समुदाय कहाँ से आया, कब आया इसकी सूक्ष्म जानकारी मिल रही है। इन पहचान चिन्हों का मिलान कर विभिन्न प्रदेशों, जनसंख्या समूहों तथा समुदायों के बीच परस्पर सम्बन्धों का आंकलन किया जा सकता है और वैज्ञानिक अध्ययनों के लगातार ऐसे निष्कर्ष सामने आते रहे हैं। पर इन निष्कर्षों की एक सीमा है। चूंकि ये निष्कर्ष उपलब्ध जैवीय स्रोतों पर आधारित हैं तो यदि कोई समुदाय पूरी तरह से विलुप्त हो गया है तथा उसका कोई भी वंशज जीवित नहीं है या जीवित है और इस अध्ययन में उन्हें शामिल नहीं किया गया है तो उनके बारे में कोई सूचना प्राप्त होने की सम्भावना कम होती है।

वैज्ञानिकों ने पूरी दुनिया से माइट्रोकॉन्ड्रिया में उपलब्ध डी.एन.ए. का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि अफ्रीका के कुछ आदिवासियों में सबसे अधिक विविधताएँ पायी गई। चूंकि उत्परिवर्तन समान दर से होते रहते हैं इसलिए ये अफ्रीकी आदिवासी बाकी दुनिया से बचे लोगों से कम से कम दोगुने अधिक प्राचीनतम हैं। इस तरह से आज पायी जाने वाली सारी आबादी १५०००० वर्ष पूर्व की किसी एक महिला की संतानें हैं। अभी भी अफ्रीका में उस प्राचीनतम आबादी के अंश मौजूद हैं। इसमें से प्रमुख हैं साऊथ अफ्रीका के सेन, मध्य अफ्रीका के पिआका

पिगमी एवं पूर्वी अफ्रीका की कुछ आदिवासी जातियाँ।

अफ्रीका से बाहर निकलने के दो रास्ते थे एक दक्षिणी मार्ग, पूर्वी अफ्रीका से लाल सागर का मुहाना पार करते हुए भारतीय उपमहाद्वीप का समुद्र तट तथा दूसरा उत्तरी मार्ग, पूर्वी अफ्रीका से लाल सागर के किनारे-किनारे रेगिस्तान पार कर फिर वापस भारत की ओर। इससे पहले अफ्रीका के बाहर विश्व में दो स्थानों पर आधुनिक मानव के रहने के प्रमाण मिले हैं एक ऑस्ट्रेलिया में मुंगों झील (४६०००वर्ष पूर्व) तथा बोर्नियों के नियाह गुफाओं में (लगभग ४५००० वर्ष पूर्व) अफ्रीका से निकलने के बाद यदि आधुनिक मानव ४६००० वर्ष पहले ऑस्ट्रेलिया पहुँच गया था, तो वैज्ञानिकों का मत है कि उसने समुद्र के किनारे-किनारे दक्षिणी मार्ग का रास्ता लिया होगा। ईराक,ईरान,पाकिस्तान तथा दक्षिणी भारत के समुद्र तट से होते हुए बंग्लादेश, बर्मा, मलेशिया के समुद्र तट की यात्रा करते-करते आस्ट्रेलिया पहुँचा होगा।

क्या उस समय उनके पास लाल सागर का मुहाना पार करने की तकनीकी नाविकीय क्षमता थी?

वैज्ञानिकों का कहना है कि उस समय समुद्र तल आज के स्तर से लगभग १०० मीटर नीचे था। यदि तटीय मार्ग से उन्होंने यात्रा की थी तो उसके प्रमाण समुद्र में विलीन हो चुके हैं। अब मात्र जेनेटिक प्रमाण ही रास्ता दिखा सकते हैं।

वैज्ञानिकों का विचार है कि आदिमानव की महायात्रा लगभग आज से ५००००से ८०००० वर्ष पूर्व शुरू हुई होगी। अब उनका पहला जत्था अफ्रीका से एशिया की ओर आया होगा फिर धीरे-धीरे एक गाँव से दूसरे गाँव बसाते हुए भारतीय तट पर आया होगा। यहाँ इसी प्रकार भारतीय उपमहाद्वीप के समुद्री तट से बर्मा इन्डोनेशिया होते हुए आज से लगभग ४५००० वर्ष पूर्व दक्षिण पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया पहुँचा होगा।

४५००० वर्ष की यह यात्रा स्वप्रिल यात्रा थी जिसमें धीरे-धीरे बस्तियाँ बसती रहीं और पुन: कुछ माहमी नौजवान आगे के क्षेत्रों में रहने की सम्भावना तलाशते रहे होंगे। फिर नयी बस्ती बसती रही होगी। इस दौरान पाषाण कालीन हथियार विकसित हुए थे पर इस महायात्रा के स्थूल प्रमाण नहीं मिलते। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि उस समय हिमपात होने के कारण समुद्र तल आज की तुलना में काफी नीचे रहा होगा और इस यात्रा के तमाम प्रमाण अब समुद्र तल बढ़ने से पानी के नीचे चले गए हैं जिनका अब मिलना कठिन है।

यूरोपीय महाद्वीप में आधुनिक मानव का प्रवेश लगभग ४०००० वर्ष पूर्व हुआ होगा। उस समय वहाँ नियन्डरथल मानव रहा करते थे। अफ्रीका से निकली मानवों की एक शाखा मध्य एशिया, चीन होते हुए साइबेरिया पहुँची और हिमयुग के अंतिम चरण में साइबेरिया से अलास्का पहुँची। वैज्ञानिकों के अनुसार यह समय लगभग २०००० वर्ष से १५००० वर्ष पूर्व का रहा होगा। आजकल प्राप्त प्रमाणों से अमरीकी महाद्वीप में आधुनिक मानव के प्रवेश के अन्य रास्तों की भी सम्भावनाएँ बनने लगी हैं।

आधुनिक मानवों का जत्था यदि दक्षिणी मार्ग से होते हुये भारतीय समुद्र तट के साथ-साथ गया होगा तो समुद्र का जल स्तर बढ़ने से उनके द्वारा छोड़े गए अवशेष या प्रमाण समुद्र में समाहित हो चुके हैं। भारतीय उपमहाद्वीप या उनके प्राचीन रास्तों की आधुनिक जनसंख्या इतनी विकसित हो गयी है कि इतने प्राचीन महायात्रा के ठोस प्रमाण ढूंढ़ना कठिन है। पर सौभाग्य से ऐसे दो समुदाय बचे हुए हैं जिनके अध्ययन से ऐसी किसी यात्रा के प्रमाण मिल सकते थे। भारतीय वैज्ञानिकों के एक दल ने हैदराबाद स्थित कोशकीय एवं आणविक जीव विज्ञान केन्द्र के पूर्व निदेशक डॉ. लालजी सिंह के नेतृत्व में अण्डमान और निकोबार द्वीप के आदिवासियों का अध्ययन किया तथा वैज्ञानिकों के एक दूसरे दल ने मलेशिया के मूल निवासियों, ओरांग असली का अध्ययन किया। इन्होंने अपने निष्कर्ष साइन्स के १३ मई २००५ के अंक में प्रकाशित किये।

इसके पहले भी इसी प्रकार के किये गये अध्ययनों की रिपोर्ट सामने आयी है। ब्रिटिश वैज्ञानिकों के एक दल ने सोचा कि हो सकता है कि आज की प्रजाति वर्ण संकरण के कारण सही तस्वीर प्रस्तुत न करे, तो उन्होंने नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम, लंदन में उपलब्ध अण्डमान निकोबार द्वीप समूह से ली गई मानव अस्थियों से डी.एन.ए. निकालने में सफलता प्राप्त की। इनसे प्राप्त माइट्रोकॉन्ड्रिया डी.एन.ए. से पता चलता है कि इसमें भी भारतीय महाद्वीप में पाए जाने वाले पहचान चिन्ह उपलब्ध हैं परन्तु कुछ अन्य पहचान चिन्ह भारतीय भू-भाग के समुदाओं में उपलब्ध नहीं थे। यह मात्र इन्हीं समुदाओं में उपलब्ध थे। पर इनका निष्कर्ष है कि अण्डमान के निवासी नीग्रो की तरह दिखने के बावजूद भारतीय भू-भाग के लोगों से जुड़े हैं। इनके पूर्वज भारतीय भूभाग के तटीय भागों पर रहने वाले लोग रहे होंगे जो सबसे पहले अफ्रीकी महाद्वीप से आये होंगे। अण्डमान निकोबार पर अलग-थलग रहने के कारण इनमें विकसित पहचान चिन्ह मुख्य भू-भाग पर नहीं पाए जाते। नीग्रो जैसी आकृति मूलत: परिवेशगत रहन-सहन की देन है।

शेष भाग अगले अंक में.....

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (द्वितीय स्तर)

दिनांक १५ से २२ जून २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आंकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे। इस दिशा में अब तक दो शिविरों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर सफल प्रयास किया गया है। **इस द्वितीय स्तर के शिविर में वे ही भाग ले सकेंगे, जिन्होंने प्राथमिक स्तर वाले शिविर में भाग लिया है।** इस शिविर में प्राथमिक स्तर वाले शिविर की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मता से विषयों का अनुभव करवाया जाएगा और वैसा ही सूक्ष्मता से, कठोरता से नियम व अनुशासन होगा।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. दिनचर्या के कुछ भाग में आकृति मौन भी अनिवार्य होगा।
३. प्रार्थी की न्यूनतम दसवीं के स्तर की योग्यता अनिवार्य है। इस हेतु प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि लाना आवश्यक है।
४. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
५. शारीरिक व मानसिक सात्विकता के लिए यथासम्भव भोजन की मात्रा निश्चित होगी।
६. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
७. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
८. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
९. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
१०. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
११. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
१२. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१३. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
१४. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से

पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १३ से २० अप्रैल, २०१४ **ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर,** सम्पर्क : ०९४१४००३७५६, समय : मध्याह्न १.३० से २.३० बजे।

२. १६ से २३ मई, २०१४ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

३. २४ से ३१ मई, २०१४ **संस्कृत सम्भाषण शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४७०९४९४

४. १ से ८ जून, २०१४ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

५. १५ से २२ जून, २०१४- **योग-साधना शिविर (द्वितीय स्तर),** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

विशेष- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित पूर्व दो ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविरों में प्रथम व उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त प्रशिक्षकों के लिए भी योग साधना शिविर (द्वितीय स्तर) में भाग लेने का अवसर रहेगा।

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

१३ से २० अप्रैल, २०१४, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर शुल्क १००० रु. है। १३ अप्रैल सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी। शिविर का समापन २० अप्रैल को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००३७५६, समय-मध्याह्न १.३० से २.३०।

५० की सीमित संख्या में प्रथम पंजीयन करवाने वाले को ही शिविर में भाग लेने की अनुमति होगी।

पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

वेदों की बातें

– रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

१. **समानी प्रपा सह वोन्न भागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि। सम्यञ्चोग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।**
(अर्थव. ३.३०.६)
तुम्हारा खान-पान इकट्ठा हो। मैं तुम्हें इकट्ठा एक ही जोग में जोतता हूँ। जैसे रथ-चक्र के अरे सब ओर से चक्र-नाभि में जुड़े रहते हैं, ऐसे ही तुम एक दूसरे से मिले-मिलाए हुए प्रभु की पूजा करो।

२. **अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।**
(अथर्व. ३.३०.२)
घर-घर में पुत्र पिता का आज्ञाकारी और माता के साथ मिले हुए मन वाला हो।

३. **जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवान्।**
(अथर्व. ३.३०.२)
पति-पत्नी परस्पर मीठी और शान्तिदायक वाणी बोलें।

४. **ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।**
(अथर्व. ११.५.१७)
राजा ब्रह्मचारी रूपी तप की सहायता से राष्ट्र की विशेष रूप से रक्षा करता है।

५. **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।**
(ऋग्. १.२२५.१)
सूर्य जड़ और चेतन सबकी आत्मा है।

६. **तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्त्रः।**
(अथर्व. ९.१०.१९)
उस ब्रह्म से ही चारों दिशाएँ जीवन पाती हैं।

७. **श्रद्धया सत्यमाप्यते।**
(यजु. १९.३०)
श्रद्धा से सत्य प्राप्त होता है।

८. **न दुरुक्ताय स्पृह्येत्।**
(ऋग्वेद १.४१.९)
गलत वचन बोलने की इच्छा मत करो।

९. **प्रणीतिरस्तु सूनृता।**
(ऋग्वेद ६.४८.२०)
हमारी नीति सरल व सच्ची हो।

१०. **प्रेता जयता नरः।**
(अथर्व. ३.१९.७)
तुम आगे बढ़ो और विजयी बनो।

११. **अपृणन् मर्डितारं न विन्दते।**
(ऋग्वेद, १०.११७.१)
जो स्वयं सहायक नहीं बनता उसका भी कोई सहायक नहीं बनता।

१२. **नमो मात्रे पृथिव्यै।** (यजु. ९.२२)
मातृभूमि को नमस्कार हो।

१३. **तस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वम्।**
(यजु. ३२.८)
यह सम्पूर्ण विश्व उस परमात्मा में ही विलीन होता है और उसी से उत्पन्न होता है।

१४. **यो नः पाप्मन् न जहासि तमु त्वा जहिमो वयम्।**
(अथर्व. ६.२६.२)
पाप अपने आप किसी को छोड़ता नहीं, वह तो अभ्यास से बढ़ता ही है।

१५. **सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणो३न्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम्।**
(अथर्व. ५.९.७)
सूर्य ही मेरे नेत्र हैं, वायु ही प्राण है, अन्तरिक्ष ही आत्मा है तथा पृथ्वी ही शरीर है।

१६. **अहमनृतात् सत्यमुपैमि।**
(यजु. १.५)
मैं झूठ को छोड़ कर सत्य को ग्रहण करता हूँ।

१७. **एकं ज्योतिर्बहुधा विभाति।**
(अथर्व. १३.३.१७)
वह एक ही ज्योति है जो बहुत प्रकार से चमक रही है।

१८. **तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योः।**
(अथर्व. १०.८०.४४)
ब्रह्मज्ञानी मौत से कभी नहीं डरता।

१९. **तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा।**
(यजु. ३१.१९)
उस परमेश्वर के सहारे भुवन खड़े हैं।

२०. **ईजाना स्वर्गं यन्ति लोकम्।**
(अथर्व. १८.४.४.२)
यज्ञ करने वाले स्वर्गलोक को जाते हैं।

२१. **ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुः।**
(ऋग्वेद ९.७३.८)
सत्य का रक्षक और सत्कर्मी किसी से दबाया नहीं जा सकता।

२२. मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।
(यजु. ४०.१)
अन्य किसी के धन का लोभ मत करो।
२३. आशा भवतु नस्तनुः।
(यजु. २९.४९)
हमारा शरीर पाषाणवत् दृढ़ हो।
२४. स्वं महिमानमायजताम्।
(यजु. २१.४७)
अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाओ।
२५. संख्याता अस्यनिमिषो जनानाम्।
(अथर्व. ४.१६.५)
वह प्रभु मनुष्यों द्वारा झपकी जा रही पलकों की संख्या को भी जानता है।
२६. अरातिर्नो मा तारीत।
(अथर्व. २०७.४)
कोई शत्रु हमें न दबा पाए।
२७. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः।
(ऋग्वेद १८.२.१८)
देवता पुरुषार्थियों से प्यार करते हैं। सोने वालों को वे नहीं चाहते। आलस्य रहितों को परम आनन्द मिलता है।
२८. सं श्रुतेन गहेमहि
(अथर्व. १.१.४)
हम वेद ज्ञान को पाएँ।
२९. एष इन्द्रो वरिवस्कृत्।
(ऋग्. ८.१६.६)
यह इन्द्र ही बल का दाता है।
३०. स्वस्ति पन्थामनुचरेम।
(ऋग्. ५.५१.१५)
हम कल्याणकारी मार्ग पर चलें।
३१. पश्येम शरदः शतम्।
(अथर्व. ५.३.५)
हम सौ वर्ष तक सजग एवं गतिशील रहकर जिएँ।
३२. नेह भद्रं रक्षस्विने।
(ऋग्वेद ८.४७.१२)
राक्षसी बल वाले का कल्याण नहीं होता।
३३. तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः।
(अथर्व. १९.२३.३०)
उस ब्रह्म के साथ स्पर्धा कौन कर सकता है।
३४. प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।
(यजु. ३२.४)
वह परमेश्वर सर्वतोमुखी सर्वत्र वर्तमान है।
३५. एनो मा निगां कतमच्चनाहम्।
(अथर्व. ५.३.४)
मैं किसी भी पापकर्म को न करूँ।
३६. सहस्त्रं साकमर्चत।
(ऋग्. १.८०.९)
सहस्त्रों मिलकर भगवान की पूजा करो।
३७. सबलो अनपच्युतः।
(अथर्व. २०.४७.३)
बलवान कभी गिरता नहीं।
३८. शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।
(ऋग्. १०.१८.२)
शुद्ध पवित्र और परोपकारी जीवन के धनी बनो।
३९. अपाञ्चो यन्तु निवता दुरस्यवः।
(अथर्व. ५.३.२)
हमारी हानि चाहने वाले नीचे धकेल कर दूर भागें।
४०. नो दुष्टरं त्रायमाणं सहः।
(अथर्व. ६.४.१)
हमारा बल ऐसा तेजयुक्त हो कि कोई उसका सामना न कर सके।
४१. प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे।
(अथर्व. ३.१६.१)
प्रतिदिन प्रातःकाल हम अग्नि और इन्द्र (शक्ति सम्पन्न) को भजते हैं।
४२. इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।
(यजु. ३२.१६)
मेरी विद्या और बल उन्नत हों। इन के मेल और विकास द्वारा सच्चा हित सिद्ध होता है।
४३. अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्याः।
(यजु. २.१०)
हमारी कामनाएँ फल लाएँ।
४४. ओजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्।
(यजु. ८.३९)
मैं अधिकतम बल और शक्ति का स्वामी बनूँ।
४५. मम.... वर्चो विहवेष्वस्तु।
(ऋग्. १०.१२८.१)
जब दूसरे ललकारें, तो युद्ध में मेरा तेज चमके।
४६. न यस्य हन्यते सखा न जीर्यते कदाचन।
(ऋग्. १०.१५२.१)
परमेश्वर की स्तुति करने वाला न मारा जाता है और न ही पराजित होता है।
४७. अक्षैर्मा दीव्यः।

(ऋग्. १०.३४.१३)

जुआ मत खेलो।

४८. भवा वृधः सखीनाम्।

(ऋग्. ७.३२.२५)

मित्रों को बढ़ाने वाले बनिए।

४९. देव सवितः, प्रजावत् सावीः सौभगम्।

(ऋग्. ५.८२.४)

हे सविता देव! हमें प्रजा दे (और साथ में) ऐश्वर्य भी दे।

५०. ऋतस्य धीतिर् वृजिनानि हन्ति।

(ऋग्. ४.२३.८)

पुण्य कर्म करने से ही पापों का नाश होता है।

५१. कामो राये हवते मा स्वस्ति।

(ऋग्. ५.४२.१५)

शुभ संकल्प कल्याणकारी धन के लिए मेरा आह्वान करता है।

५२. अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।

(ऋग्. १.९४.१)

हे परमात्मन्! आपकी मित्रता मिल जाए, तो फिर हमें कोई कष्ट नहीं होगा।

- सिहाल, कांगड़ा-१७६०५३ (हि.प्र.)

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया

सभी विद्वानों व परोपकारी के सुधी पाठकों से निवेदन है कि अपना नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता (पिन कोड सहित), दूरभाष संख्या और ई-मेल किसी भी माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें जिससे कि परोपकारिणी सभा के वर्तमान के पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया में सहयोग मिल सके।

जीवन का बगीचा

– सुकामा आर्या

अपने इस छोटे से जीवन काल में हम विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के लोगों से संपर्क करते हैं इस प्राथमिक संपर्क के बाद किन्हीं लोगों से तो हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध हो जाता है जो दीर्घकाल तक चलता है– कुछेक के साथ यह सम्बन्ध जीवन पर्यन्त चलता है। कुछेक के साथ यह घनिष्ठता अल्पकाल के लिए ही होती है।

जैसे घर के बगीचे में कुछ पौधे हम लगाते हैं जो केवल एक ही ऋतु में फल देते हैं जैसे सब्जियों के पौधे, कुछ फूलों के पौधे। कुछ पौधे कुछ वर्षों तक रहते हैं जैसे आम, अनार आदि के। कुछ पौधों, पेडों की जीवन अवधि हमारी जीवन अवधि से भी ज्यादा लम्बी होती है इनकी जड़े भी काफी मजबूत होती हैं। जैसे पीपल, वट वृक्षादि। इन सबको उत्तरोतर कम देखभाल की जरूरत होती है। कुछ कैकटस (कांटेदार पौधे) भी रहते हैं जिन्हें न्यूनतम देखभाल की आवश्यकता होती है।

जिस तरह से हम अपने बगीचे की देखभाल, संभाल करते हैं, वैसे ही अपने मन में आबाद जीवन के विभिन्न सम्बन्धों रूपी बागीचे को भी देखना होता है। हमारा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के लोगों से सम्बन्ध देश काल व परिस्थितियों पर निर्भर करता है। जिस प्रकार हम अपनी आवश्यकतानुसार ऋतु अनुसार अपनी पंसद के मुताबिक पेड़ पौधे लगाते हैं वैसे ही हमें अपने सम्बन्धों के संदर्भ में करना होता है। हम एक सामजिक प्राणी हैं, अपने अधिकारों की प्राप्ति व कर्तव्यों के पालन के लिए यह आवश्यक है।

कोई पौधा लगाने की अपेक्षा उसकी देखभाल अधिक समय व श्रम की मांग करती है कोई भी सम्बन्ध बनाने से पहले हम अपने मन में यह निर्धारित कर लें कि इस सम्बन्ध से हमें क्या-क्या अपेक्षाएँ हैं? हम इस सम्बन्ध को कितना ध्यान, समय व देखरेख दे सकते हैं क्योंकि हमारे हरेक संबंध को प्रेम रूपी जल, विश्वास रूपी खाद व समय रूपी धूप की आवश्यकता रहती है इन तीनों के अभाव में कोई भी सबंध अपने फल स्वरूप को नहीं प्राप्त कर सकता।

फिर उस जीवन के बागीचे में क्यारियाँ भी बनानी होती हैं ताकि उसमें प्रेम रूपी जल सहजता से ठहर सके। अब क्यारी यथोचित नहीं बनी होगी तो जल इधर उधर बिखर जाएगा इसी तरह अगर हम विभिन्न रिश्तों में अपेक्षाकृत दूरी, संयम नहीं रखेगें तो हमारा श्रम व्यर्थ हो जायगा। परिवार के संबधो में कार्यालय के संबंधो में, मित्रों के संबध में, अध्यात्मिक परिपेक्ष्य के संबधों में हमे बड़ी सावधानी से निर्वाह करना होता है।

कोई भी दो संबंध पूर्णतया एक प्रकार से नहीं निभाए जा सकते और न ही इसकी अपेक्षा ही रखनी चाहिए। दो पौधे एक ही बागीचे में एक ही खाद पानी के बाद भी एक प्रकार का फल नहीं दे सकते। एक ही मां बाप के दो पुत्र कभी पूर्णतया एक से नहीं बनते है। सो किन्हीं दो मित्रों से, दो संबधियों से, दो गुरूओं से, एक-सी देखभाल, ध्यान, प्रेम व स्नेह की अपेक्षा रखना अपने को अवसाद में डालने का कारण बनता है। इस व्यवहार भेद को हमें स्वीकार करना ही होता है। जितनी सहजता से इसे स्वीकार करेंगे उतने ही हम संतुलित रहेंगे। हरेक सम्बन्ध को अपनी तरफ से यथोचित स्नेह, प्रेम, समय व ध्यान दें परन्तु उस सम्बन्ध के फल की, परिणाम की सीमित, संकीर्ण अपेक्षा रखकर अपने को कुंठित न करें।

कई बार बहुत ध्यान रखने के बावजूद भी आंधी से, तूफान से, तेज वर्षा से कई पौधे नष्ट हो जाते हैं। उसमें हमने तो पूरी सुरक्षा, पूरी देखभाल की थी पर प्राकृतिक नियमों पर तो हमारा नियंत्रण नहीं है। सो अगर बाह्य कारणों से कुछ क्यारियां, कुछ पौधे नष्ट हो भी जाते हैं तो हमें घबराना नहीं चाहिए पुनः हिम्मत करके, उत्साह से उन्हें संवारने का प्रयास करना चाहिए और हम अधिकांश अवसरों पर ऐसा करते भी हैं । इसी तरह अविश्वास की, दूरियों की, समय की बाधता की आंधी को जीवन के संबंधों में पूर्ण प्रयास से मत चलने दें । फिर भी अगर कुछ अनचाहा होता है तो उसे सहजता से स्वीकार करें । स्थिर बैठकर लगातार लम्बे दीर्घ श्वास लेते हुए टूटे उलझे संबधो को मन में उभारें उस पूरे दृश्य को ईश्वर प्राणिधान बनाए रखते हुए- मानसिक पटल से हटा दें। क्योंकि जमीन साफ करेंगे तभी तो नए पौधे लगा पाएंगे।

कई बार यूं भी लगता है कि कुछ पौधे , फूल व फल देते ही नहीं हैं- सूख जाते हैं हम उनको उखाड़ फेंकने में तनिक भी संकोच नहीं करते हैं। इसी प्रकार जो संबध निष्क्रिय हैं, जिनमें रिश्तों की गर्माहट नहीं है- सूखे पेड़ की तरह उन्हें उखाड़ ने में, तोड़ ने में तनिक भी परवाह नहीं करनी चाहिए। ऐसे सम्बन्ध बिना कारण के हमारे ध्यान, समय व अपेक्षाओं को व्यर्थ करते हैं।

जैसे पूर्णरूप से व्यवस्थित बगीचे को देखकर हृदय आह्लादित होता है, सुख व शांति का एहसास होता है वैसे

ही मन के बगीचे को भी व्यवस्थित रखें क्योंकि ये हमारा अपना बगीचा है जो हमेशा हमारे साथ रहता है। घर के बाहर का बगीचा तो तभी सुख, खुशी देगा जब वहाँ बैठेंगे, वहाँ उपस्थित होंगे परन्तु सम्बन्धों का सुव्यवस्थित सुमधुर, सुगंधित बागीची हमें हरकाल में, हर स्थान पर, हर परिस्थिति में अपनी खुशबु से तरोताजा रखती है।

इसके लिए हमें ईश्वर की स्नेह रूपी धूप व कृपा रूपी वर्षा की सतत् जरूरत है ताकि मन का बगीचा महकता रहे- लहलहाता रहे। इसके लिए हमें साधन चाहिए- साहस के, दृढ़ता के,नई उमंग के, नए उत्साह के जिनका उपयोग कर हम पुराने, अवांछित संबधो रूपी पौधो को उखाड़ फेंके एवं नए पौधों को रोप सकें।

कुछ पेड़ ऐसे होते हैं जिन्हें हमने स्वयं नहीं लगाया होता है- वो हमारे जन्म के पहले से है और बाद में भी रहेगें। हमने उनकी कभी खास देखभाल भी नहीं की होती है ऐसे ही कुछ सम्बन्ध चिरस्थाई होते हैं जिनको बनाने में हमने कभी कोई विशेष प्रयास नहीं किया होता है We take it guaranteed कि ये तो हैं ही - रहेंगे ही- हमेशा रहेंगे। यह एक तत्त्व पर पूरा घटता है वो है ईश्वर। यह सत्य है ईश्वर से हमारा सम्बन्ध को मधुर बनाने के लिए अधिक प्रयास करना चाहिए । लोक में भी हम One sided relationship एक तरफा रिश्ते को अच्छा नहीं मानते हैं। वह ईश्वर अनंत काल से हमारी रक्षा कर रहा है। पालन कर रहा है, देखभाल कर रहा है- हम उसके प्रति उदासीन रहें तो कोई अच्छी बात नहीं होगी। हमें उसके साथ सम्बन्ध को दृढ़ बनाने के लिए अपनी संध्या उपासना, ध्यान आदि नियमित रूप से करने चाहिए, कुछ समय, कुछ प्रेम, कुछ ध्यान हम इस सम्बन्ध को भी दें क्योकिं

प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है
उसे हरदम आनंद ही आनंद है ।

यहां भी अपने स्वार्थ के लिए अपने लाभ के लिए हमें ईश्वर की उपासना करनी है। ताकि हम अपने इस Eternal relationship आन्तरिक सम्बन्धता को दृढ़ व समधुर बनाए रख सकें।

कई बार कुछ कांटेदार पेड़ पौधे भी हमें अपने बागीचे में लगे लगाए मिलते है- वो कांटे भले ही प्रत्यक्ष रूप से हमें दुखदायी प्रतीत होते हैं - पर ये भी सत्य है कि गुलाब तो कांटो पर ही लगते हैं वो हमें सावधान करते हैं कहां कहां हम कमजोर हैं, कहां कहां हम असावधान है हमें अपनी सुरक्षा के प्रति सजग करते हैं सो उन्हें भी हमें स्वीकार करना होता है । कहा भी है न -

फूल मुरझा जाएगें दो चार दिन में इसलिए,
चंद कांटे ही मंगा लो घर सजाने के लिए।
काम आती है हमारे दुश्मनों की दुश्मनी,
दोस्तों की दोस्ती है बस दिखाने के लिए।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आर्यो! धर्म रक्षा-धर्म प्रचार के लिये अब आगे आओ।

परोपकारिणी सभा अपने सर्व सामर्थ्य से ऋषि मिशन की सेवा में जुटी है। आर्यधर्म पर वार करने वालों का उत्तर देने के लिए परोपकारिणी सभा हर घड़ी तैयार रहती है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पीठ की स्थापना करके सुयोग्य विद्वान् को अरबी उर्दू के विद्वान् तैयार करने के लिये नियुक्त कर दिया। अब सभा के पास पढ़ाने वाले हैं। लगनशील सुयोग्य युवक तथा सेवानिवृत्त अनुभवी आर्य विद्यार्थी यहाँ तीन-तीन मास, छः-छः मास तथा वर्ष-दो वर्ष रहकर अरबी आदि पढ़कर पं. धर्मभिक्षु जी, पं. रामचन्द्र देहलवी जी तथा पं. शान्तिप्रकाश जी के रिक्त स्थान की भरपाई करें। इस पुण्य कार्य में दानी तथा समाजें सभा को उदारता से दान देकर सहयोग करें।

नवीन प्रकाशन का परिचय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय के द्वारा प्रेरणास्पद व भक्त्योत्पादक **कैलेण्डरों** व **स्टीकरों** का नवीन प्रकाशन किया गया है।

कैलेण्डर - (क) महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ- इसमें महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित धार्मिक-व्यवहार से लेकर ईश्वर-भक्ति तक ले जाने वाले प्रेरक-वाक्यों का संग्रह किया गया है।

(ख) सन्ध्या सुरभि- इसमें महर्षि दयानन्द जी की भक्त्योपादक वाक्य-रचना का आधार लेकर वैदिक सन्ध्या के भावों को सुरभित किया गया है।

(ग) गायत्री मन्त्र- इसमें गायत्री मन्त्र के अनेक विशेष अर्थों के द्वारा ईश्वर के गुणों के प्रति प्रेरित किया गया है। साथ में मन्त्र का भाव कविता रस में भी बाँधा गया है।

स्टीकर- इसमें परमात्मा के मुख्य नाम **ओ३म्** व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र को विशेषत: प्रकाशित किया गया है।

सभी आर्यजनों को ये नवीन प्रकाशन अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यो को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ मार्च २०१४ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ४. श्रीमती माता परमेश्वरी देवी रोहतक, हरियाणा ५. श्री अमित व श्रीमती सुमन महेश्वरी, मुम्बई ६. श्री वेदपाल शास्त्री, महेन्द्रगढ़, हरियाणा ७. श्रीमती शकुन्तला राठी, कोलकाता ८. श्री विवेक यादव, बिगोपुर, हरियाणा ९. श्री लाल चन्द आर्य, नारनौल, हरियाणा १०. श्रीमती वन्दना सोनी, विजयनगर, राजस्थान ११. श्री सोनू आर्य, झज्जर १२. श्री सत्यनारायण सोनी, अजमेर १३. श्रीमती दीपा माता, अजमेर १४. आचार्य श्री कर्मवीर, अजमेर १५. श्री रणवीर सिंह चौधरी, ब्यावर, राजस्थान १६. श्री माधव के. देशपाण्डे, पुणे, महाराष्ट्र १७. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर १८. श्री जगदीश प्रसाद आर्य, नीमच, मध्यप्रदेश १९. श्रीमती कविता गुप्ता, भुवनेश्वर २०. श्री रमन गोयल, लुधियाना, पंजाब २१. श्री रंजन हांडा, नई दिल्ली २२. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली २३. स्वास्तिकाम: चेरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र। **– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ मार्च २०१४ तक)

१. प्रधान आर्य समाज, छिन्दवाड़ा, मध्यप्रदेश २. श्री सुशील शर्मा, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. श्रीमती सरोज आर्य, अजमेर ५. श्रीमती रश्मि शर्मा, अहमदाबाद, गुजरात ६. श्री रामगोपाल आर्य, दिल्ली ७. श्री शैलेन्द्र कुमार, मेरठ, उत्तरप्रदेश ८. श्रीमती विमला अनेजा, सोनीपत, हरियाणा ९. श्री राज रहेजा, सोनीपत, हरियाणा १०. श्रीमती सन्तोष रेवाड़िया, सोनीपत, हरियाणा ११. श्रीमती सरोज कुकरेजा, सोनीपत, हरियाणा १२. श्री पंकज कुमावत, अजमेर १३. डॉ. जिगिश व हितार्थी रूपारेलिया १४. श्री विश्वास पारीक, अजमेर १५. श्री रणवीर सिंह चौधरी, ब्यावर, राजस्थान १६. कैप्टन चन्द्रप्रकाश व कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उत्तरांचल १७. श्री राजेश त्यागी, अजमेर १८. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर १९. श्री शीतल चन्द जैन,अजमेर २०. श्री विपिन कुमार लखोटिया, बैंगलूर २१. श्री भूरचन्द आर्य, चुरू, राजस्थान २२. श्री चन्द्रसिंह, पाली, राजस्थान २३. डॉ. हरिदत्त द्विवेदी, फरूखाबाद २४. श्री रविन्द्र कुमार गुप्ता, अजमेर।

–परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गुरुकुल दान खाता

(१९ जनवरी से २८ फरवरी २०१४ तक)

१. श्री नाथुलाल त्रिवेदी, भीलवाड़ा, राजस्थान २. श्रीमती रामप्यारी त्रिवेदी, भीलवाड़ा, राजस्थान ३. श्री सुनील कुमार अरोड़ा, जयपुर, राजस्थान ४. श्रीमती कौशल्या माता, बीकानेर, राजस्थान ५. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर ६. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ७. श्री विरदीचंद गुप्त आर्य, जयपुर, राजस्थान ८. श्री राजेश कुमार, नई दिल्ली ९. श्रीमती निर्मला देवी, अजमेर १०. ब्रह्मचारी राजेन्द्र, सोनभद्र, उत्तरप्रदेश ११. श्री गोपाल गोयल, मुजफ्फर नगर, उत्तरप्रदेश १२.

श्रीमती प्रतिभा, हिसार, हरियाणा १३. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर १४. श्री लालचन्द, अम्बाला १५. श्री राजेन्द्र, दिल्ली।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

दान खाता

(१ जनवरी से २८ फरवरी २०१४ तक)

१. श्रीमती तारावती कोहली, दिल्ली २. श्री ललित शास्त्री, हिसार, हरियाणा ३. श्री जगदीशनाथ भाटिया, नई दिल्ली ४. मेटल अलोयस इण्डिया, मुम्बई ५. श्री सलिल कुमार दिल्ली ६. रामप्यारी दीवानचन्द सादना ट्रस्ट, बैंगलूर ७.श्री देबर कोंडा दत्तात्रेय, वरंगल, आन्ध्रप्रदेश ८. श्री अश्विनी दीक्षित, मुरादाबाद, उत्तरप्रदेश ९. हिमांशु राठौड़, मुरादाबाद, उत्तरप्रदेश १०. श्री ओममुनि, ब्यावर, राजस्थान ११. श्रीमती उषा आर्या, अजमेर। **-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें

- नारायण जिज्ञासु

१. ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए।
२. सन्तानों को सुशिक्षित करने के लिए।
३. अन्धविश्वास और पाखण्डों को चुनौती देने के लिए।
४. वैदिक धर्म की पुनः स्थापना के लिए।
५. गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिए।
६. गृहस्थाश्रम के नियमों को समझने के लिए।
७. आश्रम व्यवस्था को समझने के लिए।
८. राजधर्म को जानने के लिए।
९. ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने की उचित विधि को जानने के लिए।
१०. ईश्वर, जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए।
११. जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय को समझने के लिए।
१२. बन्धन और मोक्ष विषय को जानने के लिए।
१३. धर्म के सत्य स्वरूप को जानने के लिए।
१४. भारतवर्ष में फैले मत-मतान्तरों में सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए।
१५. वैदिक संस्कृति को समझने के लिए।
१६. युवकों में बढ़ती हुई नास्तिकता को रोकने के लिए।
१७. धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए।
१८. विश्व में एक ही मानव धर्म को विस्तृत करने के लिए।
१९. वैचारिक क्रान्ति के लिए।
२०. धर्मयुक्त धन कामना के लिए।
२१. अशान्ति मिटाने एवं मानसिक शान्ति के लिए।
२२. दु:खों, विघ्न-बाधाओं, उलझनों एवं समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए।
२३. निरोगी काया के लिए।
२४. निर्भय एवं धैर्यवान बनने के लिए।
२५. आत्मिक एवं मानसिक बल प्राप्त करने के लिए।
२६. बुद्धिमान् एवं बलवान बनने के लिए।
२७. परीक्षा में उच्च-स्तर प्राप्त करने के लिए।
२८. मनचाही सन्तान प्राप्त करने के लिए।
२९. अधिकारी बनने के लिए।
३०. स्वावलम्बी एवं समृद्ध बनने के लिए।
३१. सर्वांगीण विकास एवं देश-विदेश में पहचान बनने के लिए।
३२. महान् देश भक्त बनने के लिए।
३३. घर को स्वर्ग बनाने के लिए।
३४. ज्योतिषियों एवं वास्तुविषयक से निर्भय होने के लिए।
३५. जादू-टोना जैसी बातों से निर्भय होने के लिए।
३६. नकली बाबाओं के मायाजाल से बचने के लिए।
३७. अच्छा पति एवं अच्छी पत्नी बनने के लिए।
३८. अच्छा वर-वधू का निर्णय करने के लिए।
३९. आतंकवाद समाप्त करने के लिए।
४०. मत सम्प्रदाय के मकड़जाल से छूटने के लिए।
४१. विभिन्न मत सम्प्रदायों के मन्तव्यों को जानने के लिए।
४२. मन की एकाग्रता के लिए।
४३. वेदादि शास्त्रों का अध्ययन के लिए।

आर्यसमाज के प्रवर्तक श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत वेदादिसच्छास्त्र प्रमाणसमन्वित अमरग्रन्थ-सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

- विश्वप्रेम मठ चेरिटेबल ट्रस्ट, निजामाबाद, आन्ध्रप्रदेश-५०३००१

चलभाष- ०९३९२५४७३७७

पुस्तक – परिचय

नाम- आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण
लेखक- आचार्य सत्यजित्
प्रकाशक- वैदिक पुस्तकालय, केसरगंज, अजमेर
पृष्ठ- १०० **मूल्य**- ४०/- रु. मात्र

मनुष्य जीवन में आध्यात्मिकता होने से जीवन सरल, सुखद, शान्त रहते हुए चलता है। आध्यात्मिकता से व्यक्ति अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य को पहचानता है और उसको प्राप्त करने के लिए पूर्ण प्रयत्न करता हुआ उसको पा ही लेता है। बिना आध्यात्मिकता के जीवन में सरलता, सुख, शान्ति का होना अत्यल्प मात्रा होता है। बिना इसके जीवन का मुख्य लक्ष्य भी प्राप्त नहीं होता। अध्यात्म को ही अपना कर हमारे ऋषि-मुनि अपने जीवन की विपरीत परिस्थितियों में सामान्य अवस्था में रहे और जीवन के उत्कर्ष में बौराये नहीं।

आध्यात्मिकता है क्या? जब यह प्रश्न मन में आता है तो हम सोचते हैं, एकान्त में रहना, अधिक से अधिक साधना करना, मौन रहना, अपने को समाज से काट कर सीमित कर लेना आदि आध्यात्मिकता है। हमारा ये सोचा हुआ आध्यात्मिकता हो सकता है, किन्तु यह अध्यात्म, आध्यात्मिक, आध्यात्मिकता का यथार्थ में क्या अर्थ है, यह ये तीनों शब्द ही बता रहे हैं, आत्मा वा परमात्मा को अधिकृत करके, विषय बना करके विचार करना चलना अध्यात्म है, जो व्यक्ति ऐसा करते हुए चल रहा है, वह आध्यात्मिक क्षणों में आत्मा को (स्वयं व अन्यों को) देखते हुए चलता है अर्थात् वह अपने व्यवहार को स्वयं के प्रति व अन्यों के प्रति देखता है कि उसका व्यवहार उचित है या नहीं, वह अपने से, अन्यों से व परमात्मा से उचित व्यवहार कर रहा है या नहीं। अध्यात्म के क्षणों में व्यक्ति देखता है कि उसके दोष घट रहे या नहीं, इसमें कारण उसके पुरुषार्थ की न्यूनता या उसके ज्ञान की न्यूनता है, मैं अध्यात्म का दिखावा तो नहीं कर रहा आदि आदि विचार करता है।

ये आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.......जीवन में आवे, उन क्षणों में व्यक्ति क्या चिन्तन करे, उसकी शैली क्या हो आदि भावों को जानने के लिए वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ, दार्शनिक, सरलता-उदारता के धनी, ऋषि परम्परा अनुयायी, उच्च कोटि के साधक, वैदिक विद्वान् आचार्य सत्यजित् जी द्वारा लिखी पुस्तक आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण पाठक अवश्य पढ़ें।

प्रस्तुत पुस्तक आचार्य श्री द्वारा परोपकारी पत्रिका में लिखे गए लेखों का संग्रह है। परोपकारी के अध्यात्म प्रेमी पाठकों को ये लेख बहुत ही रुचिकर व ज्ञानवर्धक लगे। पाठकों की प्रतिक्रिया इन लेखों के प्रति बड़ी उत्तम रही। पाठकों के लाभार्थ ये लेख अब पुस्तक रूप में हैं। पुस्तक का नाम भी आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण ही रखा है। इस पुस्तक में ३० लेख हैं-

१. कर्म विराम २. ऐश्वर्य-जिसे पाने के लिए यह जन्म मिला ३. ऐश्वर्य में रमने वाला मन ४. गहराई में शान्त मन ५. आन्तरिक शुद्धि-प्रतिदिन का कार्य ६. थोड़ी सी जागरूकता ७. अमूल्य जीवन ८. ध्यान-सुख, एकान्त सुख ९. प्रार्थना १०. नया दिन-नया जीवन ११. विकल्पों से भरा संसार १२. नया संसार १३. कभी मैं भी ऐसा था १४. ऐसा मेरे साथ भी संभव है १५. कहीं देर न हो जाए १६. आखिर कितनी बार और गिरना है? १७. क्या याचना करूँ मैं? १८. लौटना तो इसी ओर है १९. बड़े बिगबॉस का बड़ा घर २०. मनमानी कब तक २१. साधनों की साधना २२. कमनीय बाल्यावस्था २३. उपादेय व हेय संसार २४. विचारों की संलिप्तता २५. आचरण का सहारा २६. कर्म का अधिकार २७. मैं भी ऐसा हो सकता हूँ २८. थोड़ा सा बच के २९. जिन्होंने सजाये यहाँ मेले ३०. जिन्दगी से खेलो ना

प्रत्येक लेख गरिमापूर्ण व सिद्धान्त से ओतप्रोत है। ऐसा लगता है इन लेखों में आचार्य जी ने अपने मन को खोलकर रख दिया है। गहराई में शान्त मन में लिखते हैं, एकान्त में बैठकर जैसे ही हम मन में गहरे से गहरे उतरते जाते हैं, वैसे ही चंचलता-अशान्ति - दुःख दूर हटते जाते हैं और स्थिरता-शान्ति-सुख से युक्त होते जाते हैं, प्रभु ने हमें ऐसा मन दिया है जो लोकव्यवहार हेतु चलायमान भी हो सकता है व आन्तरिक व्यवहार हेतु पूर्ण स्थिर-एकाग्र भी हो सकता है। 'कहीं देर न हो जाए' में 'प्रभु कृपा से यदि आज स्वास्थ्य है, सामर्थ्य है, अनुकूल परिस्थिति है तो आध्यात्मिक पुरुषार्थ को भविष्य के लिए छोड़ना एक बड़ी भूल बन सकता है।' 'आचरण का सहारा' में लिखा- ''प्रभु कृपा है कि उसने हमें आचरण के लिए आवश्यक सभी साधन दे रखे हैं।....मात्र आचरण का सहारा पकड़ने से सारे सहारे हमारा स्वागत करने लगते हैं। तब हमें सम्मान का सहारा मिलता है,श्रद्धा व प्रेम से सहारा मिलता है। आचरण का सहारा सब सहारों की कुंजी है.......।'' और भी 'जिन्होंने सजाये यहाँ मेले' में लिखा ''आध्यात्मिक व्यक्ति जिंदगी को पहेली नहीं रहने देता, वह इसे सुलझा लेता है, वह आध्यात्मिक चिन्तन द्वारा इसे समझ लेता है, वह मेले नहीं सजाता, वह तो मात्र मैल

हटाने में लगा रहता है।''

पाठक इस पुस्तक को पढ़ते हुए अनुभव करेंगे कि पुस्तक में प्रत्येक लेख मेरे लिए लिखा गया है। मुझमें भी ऐसे विचारों के क्षण आए आकर बने रहे। आध्यात्म व आचरण प्रेमी पाठक पुस्तक का रसास्वादन कर आनन्द विभोर होंगे ऐसा निश्चय है।

पुस्तक आकर्षक आवरण से व सुन्दर कागज पर सुन्दर छपाई से युक्त, दृढ़बन्धन को लिए है। पाठक इस पुस्तक को प्राप्त कर अपने जीवन को उन्नत बनायेंगे, इसी आशा के साथ-

- सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

न्याय-दर्शन का अध्यापन

महर्षि गौतम प्रणीत **न्याय-दर्शन** और उस पर लिखा **वात्स्यायन-भाष्य** प्रमाण व अर्थतत्त्व को समझने की प्रक्रियाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। सभी वैदिक-अवैदिक दर्शनों को अपने मान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय इस पद्धति का प्रयोग करना अपेक्षित होता है। न्याय-दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'प्रमाण' है। 'प्रमाण' को ठीक प्रकार जानने से ही तत्त्वनिश्चय ठीक हो पाता है, तभी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो पाता है। प्रमाण ज्ञान से चिंतन-विचार की प्रक्रिया ठीक हो पाती है, नहीं तो अनजाने में मिथ्या सिद्धान्त गले पड़ जाते हैं। न्याय-दर्शन के अध्ययन से किसी भी बात की परीक्षा-समीक्षा की सामर्थ्य बढ़ती है और उचित-अनुचित का निर्णय सरलता-शीघ्रता-शुद्धता से हो पाता है। इस प्रकार यह शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में स्वामी विष्वङ् द्वारा (वैशाख शुक्ल द्वितीया २०७१, १ मई २०१४) से इसका विधिवत् नियमित संपूर्ण अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन १०-११ महीनों में मार्च-अप्रैल २०१५ तक पूर्ण होगा। इस बीच प्रत्येक अध्याय की लिखित परीक्षा भी ली जायेगी। कुल ५ परीक्षाएँ होंगी। इनमें ७५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को '**न्यायाचार्य**', ६१ से ७५ प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-विशारद**' व ५१ से ६० प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-प्राज्ञ**' की उपाधि दी जायेगी। इस कक्षा में संस्कृत से परिचित साधक प्रकृति के ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। इसमें बुद्धिमान्, स्वस्थ, अपने कार्यों को स्वयं करने में समर्थ, सेवाभावी, अनुशासन में रह सकने वाले अधिकतम २० पूर्णकालिक व्यक्तियों का स्थान है।

इस काल में प्रातः व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत संचालित आर्य गुरुकुल सलखिया, जिला रायगढ़, छत्तीसगढ़ के अधिष्ठाता एवं सभी पदों से स्वामी रामानन्द को परोपकारिणी सभा द्वारा मुक्त कर दिया गया है।

सभी आर्यजन व दानदाताओं से निवेदन है कि स्वामी रामानन्द को परोपकारिणी सभा से सम्बन्धित आर्य गुरुकुल सलखिया के लिए कोई धन राशि अथवा अन्य सामान दान के रूप में प्रदान न करें।

स्वामी रामानन्द को उनकी अनधिकृत, अवैध, अनुचित व अनुशासनहीनता पूर्ण प्रवृत्तियों व गतिविधियों के कारण परोपकारिणी सभा ने गुरुकुल सलखिया के समस्त पद एवं दायित्व से मुक्त कर दिया है।

– मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

प्रतिक्रिया

१. श्रीमन् नमस्ते।'परोपकारी' पत्रिका नवम्बर और दिसम्बर प्रथम व द्वितीय आप द्वारा मेरे पत्र के उत्तर में भिजवाई तदर्थ धन्यवाद। दिसम्बर द्वितीय की पत्रिका तो डाकिया समाज की पत्रिका के साथ डाल गया था। बाद में पता चला। सम्पादकीय लेख सामयिक समस्याओं पर श्री धर्मवीर जी के, श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु के तथ्यपूर्ण प्रामाणिक लेख, वैदिक साहित्य पर स्वामी विष्वङ् जी, महात्मा चैतन्य मुनि, उमाकान्त जी उपाध्याय आदि वैदिक मनीषियों के लेख प्रशंसा के योग्य हैं। किन शब्दों में प्रशंसा करूँ, आप व परोपकारिणी सभा अपने कर्त्तव्य का सही प्रकार से निरवहन कर रहे हो। लेख वैदिक मान्यताओं तथा ॠषि सिद्धान्तों के अनुकूल ही होते हैं। आपको व सभा को साधुवाद।

धर्मसिंह आर्य, न्यू मेडिकल स्टोर, बजाजा बाजार, राजगढ़ अलवर, राजस्थान

२. परोपकारी पत्रिका अक्टूबर द्वितीय २०१३ का अंक पढ़ा। आदरणीय धर्मवीर जी का सम्पादकीय 'उत्तराखण्ड में खण्ड-खण्ड हुआ पाखण्ड' बहुत ही उच्च कोटि का व अनुकरणीय था। जिज्ञासा समाधान-४९ (आचार्य सोमदेव जी) के उत्तर पूर्ण सन्तुष्टि स्तर के थे। धर्माधर्म (स्वामी विष्वङ् जी), कुछ तड़प-कुछ झड़प (श्री राजेन्द्र जिज्ञासु), कबीर (चमूपति जी), कुहकस्य स्वर विषयक महर्षि दयानन्द (आचार्या सूर्या देवी), सभी विद्वानों व विदुषी आचार्या सूर्या देवी के विचार पथ प्रदर्शक, श्रेष्ठ व अनुकरणीय थे। परोपकारी पत्रिका वैदिक ज्ञान के साथ-साथ समाज को अच्छा सन्देश दे रही है।

अशोक आर्य, प्रधान आर्यसमाज गंगयचा अहीर, (बीकानेर) रेवाड़ी, (हरियाणा)-१२३४०१

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

जिज्ञासा समाधान – ६०

– आचार्या शीतल

जिज्ञासा– सत्यार्थ प्रकाश आदि में– 'इदि परमैश्वर्ये, ऋ गतिप्रापणयोः, पा रक्षणे' आदि लिखा गया है। इनका निर्धारण कौन और कैसे, किस आधार पर करता है कि 'पा' का अर्थ 'रक्षण करना' होता है? 'पा' का सम्बन्ध रक्षण के साथ, 'इदि' का सम्बन्ध ऐश्वर्य के साथ, 'ऋ' का सम्बन्ध गति के साथ, इत्यादि कौन सुनिश्चित करता है और किन नियमों से? कृपया यह समझाने का कष्ट कर अनुगृहीत करें।

– भावेश मेरजा, गुजरात

समाधान– भावेश जी ने दो प्रश्न पूछे हैं–

१. 'पा–आदि' धातुओं के 'रक्षणादि' अर्थों का निर्णय कौन करता है?

२. किन नियमों के आधार पर धातुओं के अर्थों का निर्णय किया जाता है?

१. प्रथम प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है– भारतीय इतिहास में सब विद्याओं को वेद से निकालकर, उनका प्रवचन करने वाला आदि प्रवक्ता ब्रह्मा माना जाता है। ''जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों ऋषियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा से ऋग्, यजुः, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।'' (स.प्र. समु. ७)। ''पूर्वोक्त अग्नि, वायु, रवि और अङ्गिरा से ब्रह्मा जी ने वेदों को पढ़ा था'' (ऋ.भा.भू. वेदोत्पत्ति-विषय)। ऋक्तन्त्रकार ने लिखा है– ''ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषिभ्यः, ऋषयो ब्राह्मणेभ्यः''। अर्थात् ब्रह्मा ने बृहस्पति को उपदेश किया, बृहस्पति ने इन्द्र को, इन्द्र ने भारद्वाज को, भारद्वाज ने अन्य ऋषियों को, ऋषियों ने ब्राह्मण को..... इस प्रकार विद्या की परम्परा चली। पातञ्जल महाभाष्य के ''बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच''– इस लेख से स्पष्ट है कि बृहस्पति ने इन्द्र को एक-एक शब्द का अर्थ सहित उपदेश किया था। इन्द्र के अध्ययन काल तक प्रकृति (धातु/प्रातिपदिक) प्रत्यय का विभागीकरण नहीं हुआ था। तैत्तिरीय संहिता (६/४/७) में लिखा है– ''वाग्वै पराच्यव्याकृतावदत्। ते देवा इन्द्रमब्रुवन्, इमां नो वाचं व्याकुर्विति..... तामिन्द्रो मध्यतोऽवक्रम्य व्याकरोत्।'' अर्थात् वाणी पुराकाल में अव्याकृत (=प्रकृति-प्रत्ययादि संस्कार से रहित) थी। देवों ने इन्द्र से कहा कि इस वाणी को व्याकृत (= प्रकृति-प्रत्ययादि संस्कार से युक्त) करो। इन्द्र ने उस वाणी को मध्य से तोड़कर व्याकृत किया अर्थात्=प्रकृति-प्रत्यय का निर्धारण किया। इससे स्पष्ट है कि 'पा-आदि' प्रकृति (धातुओं) के 'रक्षणादि' अर्थों का निर्धारण सर्वप्रथम इन्द्र ने किया। इन्द्र से लेकर पाणिनि पर्यन्त कई आचार्य व्याकरण के प्रवक्ता हो गये हैं, जिन्होंने समय-समय पर व्याकरण का प्रवचन किया। महामहोपाध्याय पं. युधिष्ठिर जी को पाणिनि से पूर्वकालीन लगभग ८५ व्याकरण प्रवक्ता आचार्यों के नाम ज्ञात थे।

२. दूसरे प्रश्न का उत्तर–

''कथं पुनर्ज्ञायते- अयं प्रकृत्यर्थाः, अयं प्रत्ययार्थः'' इति? सिद्धन्त्वन्वयव्यतिरेकाभ्याम्। (महाभाष्य १/३/१)। यह कैसे जाना जाता है कि यह प्रकृति का अर्थ है और यह प्रत्यय का अर्थ है? अन्वय-व्यतिरेक नियम से। महाभाष्य के इस उद्धरण से स्पष्ट है कि अन्वय-व्यतिरेक नियम के द्वारा 'पा-आदि' धातुओं के 'रक्षणादि' अर्थों का निर्धारण किया गया है। अन्वय-व्यतिरेक अर्थात् जिसके होने पर जो हो और जिसके न होने पर जो न हो, वह उससे सम्बन्धित होता है। जैसे–

पचति (पच्+अति) = पकाता है (पकाना, एकत्व, कर्तृत्व, प्र.पु.);

पचन्ति (पच्+अन्ति) = पकाते हैं (पकाना, बहुत्व, कर्तृत्व, प्र.पु.);

पठति (पठ्+अति) = पढ़ता है (पढ़ना, एकत्व, कर्तृत्व, प्र.पु.);

पठन्ति (पठ्+अन्ति) = पढ़ते हैं (पढ़ना, बहुत्व, कर्तृत्व, प्र.पु.);

पच्यते (पच्+यते) = पक रहा है (पकाना, एकत्व, कर्मत्व, प्र.पु.)।

यहाँ उदाहरणों में 'पचति' व 'पचन्ति' में 'पच्' का अन्वय (=बने रहना) है, तदनुरूप इन दोनों के अर्थों में भी 'पकाना' अर्थ दिखाई दे रहा है। किन्तु 'पठति' व 'पठन्ति' में 'पच्' का व्यतिरेक (अभाव, हट जाना) है, तदनुरूप उनके अर्थों में भी 'पकाना' अर्थ का अभाव है तथा 'पठ्' शब्द का अन्वय है और अर्थ में भी 'पढ़ना'

अर्थ दिखाई देता है। अत: अन्वय व्यतिरेक से सिद्ध होता है कि 'पच्' धातु का अर्थ 'पकाना' तथा 'पठ्' धातु का अर्थ 'पढ़ना' है।

अन्वय-व्यतिरेक नियम से ही इन्द्र ने भी वेद व तत्कालीन लोक-व्यवहार की भाषा से धातुओं के अर्थों का निर्धारण किया है। उदाहरण के लिये, निम्नलिखित शब्द वेद में आये हैं-

पाति (पा+अति) = (वह) रक्षा करता है (रक्षा करना, एकत्व, कर्तृत्व, प्र.पु.); (ऋ. ३/५५/१०)।

पान्ति (पा+अन्ति) = (वे) रक्षा करते हैं (रक्षा करना, बहुत्व, कर्तृत्व, प्र.पु.); (ऋ. ५/१२/४)।

पासि (पा+असि) = (तू) रक्षा करता है (रक्षा करना, एकत्व, कर्तृत्व, म.पु.); (ऋ. ६/३/१)।

पाथ: (पा+अथ:) = (तुम दोनों) रक्षा करते हो (रक्षा करना, द्वित्व, कर्तृत्व, म.पु.); (ऋ. १/१५९/३)।

पामि (पा+आमि) = (मैं) रक्षा करता हूँ (रक्षा करना, एकत्व, कर्तृत्व, उ.पु.); (ऋ. १०/२८/२)।

पातु (पा+अतु) = (वह) रक्षा करे (रक्षा करना, एकत्व, कर्तृत्व, प्र.पु., प्रैषादि); (ऋ. १/१८/५)।

पान्तु (पा+अन्तु) = (वे) रक्षा करें (रक्षा करना, बहुत्व, कर्तृत्व, प्र.पु., प्रैषादि); (ऋ. २/३/८)।

पाहि (पा+हि) = (तू) रक्षा कर (रक्षा करना, एकत्व, कर्तृत्व, म.पु., प्रैषादि); (ऋ. १/३६/१५)।

पाता (पा+ता) = रक्षा करने वाला (रक्षा करना, एकत्व, कर्तृत्व,); (ऋ. २/२०/३)।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में 'पा' शब्द अन्वित है और सभी अर्थों में रक्षा करना अर्थ भी अन्वित है। अत: अन्वय-व्यतिरेक नियम से सिद्ध होता है कि 'पा' का अर्थ रक्षा करना है। इस प्रकार अन्वय-व्यतिरेक नियम के द्वारा 'पा-आदि' धातुओं के 'रक्षा करनादि' अर्थ पुराकाल में निर्धारित किये गये।

-आर्ष-शोध-संस्थान, अलियाबाद, आन्ध्रप्रदेश

''देव दयानन्द, जगत हितकारी''

- डॉ. स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती

आये आये दयानन्द
जैसे पूर्णिमा के चन्द
देते सबको आनन्द
कैसे मैं बताऊँ, दिल खोल के

पाया शिव का सच्चा रूप
दिया वेदों को सरूप
भक्त बन गये केई भूप
मिट गये कई फन्द
कैसे मैं बताऊँ दिल खोल के

ऋषि मुनियों का रंग
किया वेदों का सत्संग
फैली धर्मज्ञान की तंरग
दिखी उपनिषदों की मकरन्द
कैसे मैं बताऊँ दिल खोल के

सुन अबलाओं की पुकार
भरी दयानन्द ने हुँकार
भागे पाखण्डी सियार
फैली सत्य की सुगन्ध
कैसे मैं बताऊँ दिल खोल के

देव दयानन्द बाल ब्रह्मचारी
जिसने बताई वेदों की बलहारी
सत्यता सत्यार्थ प्रकाश में लाई
देश हित मृत्यु को अपनाई
कर गया सबकी भलाई
नारी की महानता बताई
स्वराज की अलख जगाई
'आर्येश' धर्म की ज्योत जलाई
कैसे मैं बताऊँ दिल खोल के

- मनन आश्रम, पिण्डवाड़ा, सिरोही रोड,

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

आस्था भजन (चैनल) पर प्रवचन

स्वामी रामदेव जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने चैनल पर दो घण्टे का समय देकर वैदिक विद्वानों के प्रवचन की शृंखला प्रारम्भ की है। उसी क्रम में परोपकारिणी सभा द्वारा भी वैदिक विद्वानों के प्रवचन के प्रसारण की योजना बनाई गई। इस हेतु विगत ८-१० माह से ऋषि उद्यान परिसर में विडियो रिकॉर्डिंग का कार्य चल रहा है।

अब स्वामी रामदेव जी द्वारा इन प्रवचनों का 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ८ बजे तक प्रसारण प्रारम्भ कर दिया गया है। जिसके अन्तर्गत **७.०० से ७.२०** तक **डॉ. धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन तथा **७.३० से ७.५०** तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन विषयक प्रवचन सुने जा सकते हैं।

इस कार्य के लिए सभा और समस्त आर्यजगत् की ओर से स्वामी रामदेव जी का धन्यवाद करते हैं और आभार मानते हुए प्रभु से उनके इस सामर्थ्य और भावना को बनाये रखने की कामना करते हैं तथा उनके दीर्घायुष्य व उत्तम स्वास्थ्य की प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

सभी धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

विश्व पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश की धूम

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार) के तत्त्वावधान में ९ दिवसीय विश्व पुस्तक मेले का आयोजन दिनांक १५-२३ फरवरी २०१४ को देश की राजधानी-दिल्ली के प्रगति मैदान में किया गया। इस मेले का आयोजन प्रति दो वर्षों में किया जाता है। उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा किया गया, इस मैदान में अनेक विशालकाय कक्ष बनाये गये हैं। पुस्तक मेले के लिए आठ विशाल कक्षों का प्रयोग किया गया जिनमें विभिन्न पुस्तक विक्रेताओं व प्रकाशकों के अनुमानतः १० हजार स्टॉल थे।

स्टॉलों पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, धर्म, दर्शन, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी साहित्य, बाल साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकें विक्रय के लिए उपलब्ध थी। पुस्तकालयों एवं पुस्तक प्रेमियों के लिए एक सुनहरा अवसर था, वे अपनी मन चाही पुस्तकें एक ही स्थान पर क्रय कर सकते थे। कई कथाकार, लेखक, सम्पादक, विद्यार्थी, अध्यापक, शोधार्थी देश के विभिन्न भागों से प्रति दिन पुस्तक मेले को देखने आ-जा रहे थे। लेखक मञ्च व साहित्य मञ्च के माध्यम से विभिन्न सभागारों में प्रतिदिन, कविता, पत्रवाचन, लोकार्पण आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे। इसकी सूचना दैनिक बुलेटिन- 'मेला वार्ता' हिन्दी अंग्रेजी में प्रसारित की जाती थी।

परोपकारिणी सभा, अजमेर की ओर से इस मेले में स्टॉल बुक करायी गयी। यह स्टॉल हॉल नं. १८ में ७४ नम्बर का था। इस अवसर पर सभा द्वारा पाँच हजार सत्यार्थप्रकाश हिन्दी भाषा में, दो हजार सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी भाषा में, पाँच हजार ऋषि जीवन हिन्दी भाषा में तथा चार हजार लघु पुस्तिका, दयानन्द दी ग्रेट उपरोक्त इन सभी का निःशुल्क वितरण किया गया। साथ ही हजारों की संख्या में सी.डी. (पी.डी.एफ. फाइल) जिसमें २३ भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश एवं महर्षि दयानन्द के अन्य ग्रन्थ अंकित थे, भी निःशुल्क दी गई। सभा की इस योजना की कई सुधि लोगों ने प्रशंसा की व जागृति का प्रतीक बताया। पुस्तकों के वितरण के लिए हजारों पत्रक स्टॉल पर एवं हॉल के बाहर विभिन्न स्थानों पर बाँटे गये थे। जिसे पढ़कर लोग इस स्टॉल तक आसानी से पहुँच सके।

विश्व प्रसिद्ध ''सत्यार्थ प्रकाश एवं महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती को जन-जन तक पहुँचाने का अद्‌भुत प्रेरणा दायक एक स्तुत्य प्रयास किया गया।''

यह प्रयास वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का उत्तम प्रकार है। यह कार्य आर्य जनता के सहयोग से सफल हो सका, सभा सभी सहयोगी सदभावी जनों का हार्दिक आभार व्यक्त करती है तथा भविष्य में सहयोग की आशा रखती है।

प्रस्तुतकर्त्ता- वासुदेव आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर

संस्था - समाचार

१ से १५ मार्च २०१४

१. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) १७ से २३ फरवरी २०१४- सोनीपत, हरियाणा में, यज्ञ समिति सोनीपत द्वारा आयोजित 'यजुर्वेद परायण यज्ञ' में भाग लिया एवं उपस्थित जनसमूह को मार्गदर्शन प्रदान किया। इस यज्ञ में ब्रह्मा के रूप में डॉ. वेदपाल जी (मेरठ) आमन्त्रित थे, आपने कुशलतापूर्वक यज्ञ सम्पादन करवाया। यज्ञप्रेमी सज्जनों को इस अवसर पर संजीवरूप जी के सुमधुर भजनों का लाभ भी प्राप्त होता रहा।

(ख) २४ से २७ फरवरी २०१४- आर्यसमाज कैथल के वार्षिकोत्सव में भाग लिया, इस अवसर पर डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार भी आमन्त्रित थे, आप दोनों ने ही अपने उद्‌बोधनों के माध्यम से सुधी-श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। आमन्त्रित जनसमुदाय को इस अवसर पर उपेन्द्र जी (चण्डीगढ़) के सुमधुर भजनों का लाभ भी प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत २४ फरवरी को डी.ए.वी. कैथल के बच्चों को भी उद्‌बोधन प्रदान किया तथा २६ फरवरी को डॉ. धर्मवीर जी ने श्रीमान् कालरा जी के यहाँ पारिवारिक यज्ञ भी सम्पन्न कराया।

(ग) २८ फरवरी व १, २ मार्च २०१४- आर्यों के ऐतिहासिक गुरुकुल झज्जर के वार्षिकोत्सव में भाग लिया, इस अवसर पर और अन्य विद्वान् भी सादर आमन्त्रित थे।

आगामी कार्यक्रम- (क) ६ से ९ अप्रैल २०१४- आर्यसमाज खलासी लाईन, सहारनपुर (उ.प्र.) के कार्यक्रम में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

(ख) १३ से २० अप्रैल २०१४- ध्यान प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर, ऋषि उद्यान में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

(ग) २१ से २७ अप्रैल २०१४- पश्चिम विहार, दिल्ली में व्याख्यान प्रदान करेंगे।

२. पशु चिकित्सा शिविर- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान परिसर में स्थित गौशाला, अपने क्षेत्र की प्रतिष्ठित एवं आदर्श गौशाला है। यहाँ साहीवाल, गीर नस्ल का हृष्ट-पुष्ट गोवंश है। इन्हें यहाँ पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक आहार दिया जाता है। इन्हीं विशेषताओं से प्रभावित होकर पशु चिकित्सा विभाग, अजमेर, यहाँ गौशाला में अपने पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करता रहा है। विगत ३ मार्च २०१४ को भी एकदिवसीय पशु चिकित्सा शिविर आयोजित किया, जिसमें राजकीय पशु चिकित्सक डॉ. मनोज माथुर, डॉ. राणा व इनके सहायक कालू गुर्जर ने पशुओं के स्वास्थ्य का परीक्षण कर, नि:शुल्क औषधियाँ प्रदान की।

यज्ञ एवं प्रवचन- ऋषि उद्यान स्थित यज्ञशाला में वर्ष भर प्रतिदिन प्रात:-सायं यज्ञ का संचालन अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय भी कराया जाता है।

स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्- ''पढ़ने और पढ़ाने का कार्य सतत् चलते रहना चाहिये।'' उपनिषद् के इस वाक्य को साकार करते हुये, ऋषियों की परम्परा को आगे बढ़ाते हुये ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय किया जाता है, जिसका ब्रह्मचारियों एवं आश्रमवासियों के साथ-साथ अतिथियों को भी पूर्ण लाभ मिलता है। अपने प्रात: कालीन यज्ञोपरान्त व्याख्यान में डॉ. धर्मवीर जी ने यजुर्वेद के ३१वें अध्याय (पुरुषाध्याय) की व्याख्या प्रस्तुत की। मन्त्र

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत।।

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि आज हमारे समाज में वर्णों को जन्मना मानने का जो प्रचलन चल रहा है, वह वस्तुत: वेद के सिद्धान्त के आधार पर गलत है। इस तथाकथित वर्णव्यवस्था के समर्थक वेद के इस मन्त्र के द्वारा जन्मना वर्णव्यवस्था का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार ब्राह्मण ब्रह्म के मुख से, क्षत्रिय भुजाओं से, वैश्य उदर से तथा शूद्र उस परमशक्ति के पैरों से उत्पन्न हैं, अत: इस आधार पर इनमें श्रेष्ठ-निकृष्ट का व्यवहार होना चाहिए। डॉक्टर साहब ने बताया कि सर्वप्रथम उन जन्मना जाति व्यवस्था-समर्थकों का यह अर्थ गलत तथा दोषपूर्ण है। परमेश्वर के निराकार होने से उसके भौतिक मुख आदि तो होते नहीं अत: यहाँ अलंकारिक अर्थ समझना चाहिए। ब्राह्मण सिर से उत्पन्न हुआ इसलिए श्रेष्ठ है, यह अवधारणा गलत इस आधार पर भी है क्योंकि सिर, पैर, पेट व हाथ समग्र रूप से ही एक ईकाई बनाते हैं, इनकी अलग-अलग कोई सत्ता नहीं। किसी को जन्मना श्रेष्ठ मानने वालों से आपने यह प्रश्न किया कि जब परमात्मा सर्वज्ञ है और उस सर्वज्ञ परमात्मा के मुख से ब्राह्मण अनपढ़ कैसे उत्पन्न हो सकता है? अर्थात् जन्म से ही ब्राह्मण को उस सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान प्राप्त होना चाहिए। पुन:

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमस: परस्तात्।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

मन्त्र की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि इस सूक्त में जहाँ ईश्वर के सृष्टिकर्त्ता रूप की चर्चा है, वहीं इस मन्त्र में दु:ख-त्राता स्वरूप की चर्चा की गई है। उस परमात्मा को जानकर ही जीव मृत्यु को पार कर सकता है, मृत्यु को पार करने का इसके अतिरिक्त कोई और उपाय है ही नहीं। हमारे यहाँ कुछ लोगों का मत है कि जब मनुष्य इस संसार में ही रहता है, यहाँ के पदार्थों का प्रयोग करता है, तो उसका चिन्तन भी इसी लोक में सम्बन्धित होना चाहिए। परमेश्वर, मुक्ति जैसे अति-लौकिक पदार्थों की चर्चा हमारे यहाँ क्यों की जाती है? इसका समाधान करते हुए आपने बताया कि हम देखते हैं कि हमारा जन्म हमारे हाथ में नहीं है, अत: मृत्यु भी हमारे अधीन नहीं है, यहाँ हम पराधीन है। इस पराधीनता से हमें दु:ख होता है। इस पराधीनता का कारण हमारा जन्म लेना है। अत: हमारे यहाँ इस जन्म लेने के कारणों की जब गवेषणा शुरू होती है तो इसमें कर्म, मुक्ति, परमेश्वर जैसे पदार्थ अपरिहार्य रूप से उपस्थित हो जाते हैं। अत: हमारे शास्त्र उपरोक्त कर्मादि पदार्थों की विस्तृत चर्चा करते हैं।

सायंकालीन स्वाध्याय के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द रचित '**सत्यार्थ-प्रकाश**' के तीसरे समुल्लास का स्वाध्याय चल रहा है। **आचार्य कर्मवीर जी** ने ''**अकामस्य क्रिया काचित्**'' श्लोक की व्याख्या करते हुये कहा कि कोई भी व्यक्ति बिना इच्छा के कार्य नहीं करता। यदि क्रिया हुई है तो उसकी कामना भी अवश्य ही हुई होगी। कुछ लोग क्रोध में अपशब्द बोल देते हैं और जब क्रोध शान्त हो जाता है तो कहते हैं कि मैं ऐसा बोलना नहीं चाहता था, परन्तु ना चाहते हुये भी बोला गया। वस्तुत: सूक्ष्मता से देखने पर पता चलता है कि जिह्वा तो जड़ है, उसे प्रेरित करने वाला मन भी जड़ है, ये स्वयं कुछ भी नहीं कर सकते। जो भी क्रिया होती है, आत्मा की इच्छा से ही होती है। आगे धर्म के लक्षणों की व्याख्या करते हुये आपने कहा कि धर्म को जानने के लिये श्रुति अर्थात् वेद की आज्ञाओं को जानना होगा। यदि वेद उपलब्ध नहीं हैं, सहज अवगम्य नहीं हैं तो स्मृतियाँ (मनुस्मृत्यादि) हमारा मार्गदर्शन करेंगी। यदि हम स्मृतियों को पढ़ने में भी सक्षम नहीं हैं, तो सज्जनों का, विद्वानों का आचरण हमें धर्म का बोध करायेगा और यदि ये तीनों भी हमें उपलब्ध नहीं होती हैं तो धर्म को जानने के लिये सरल और सहज मार्ग दर्शक है- ''**स्वस्य च प्रियमात्मनः**'' अर्थात् जो व्यवहार हम दूसरों से स्वयं के लिये चाहते हैं, वही व्यवहार दूसरों के साथ करें। इनमें भी पूर्व के लक्षण अधिक बलवान होंगे। वही व्यवहार मान्य होगा जो वेदों, स्मृतियों और श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण के अनुकूल हो। श्रेष्ठों (सज्जनों) का वही आचरण प्रामाणिक माना जायेगा जो वेदों और स्मृतियों के अनुकूल होगा। स्मृति या स्मृतियों के वही श्लोक प्रामाणिक होंगे जो वेद के अनुकूल हों और वेद ईश्वर की वाणी होने से स्वत: प्रमाण है, उसे अन्य किसी प्रमाण की अपेक्षा/आवश्यकता नहीं है।

'गोकरुणानिधि' पुस्तक का स्वाध्याय कराते हुये **आचार्य सत्येन्द्र जी** ने बताया कि जो व्यक्ति तर्क देते हैं कि मांस खाने वाले अधिक बलवान होते हैं और शाकाहारी निर्बल होते हैं, उनका ये तर्क ही निराधार है, क्योंकि पशुओं में भी हम देखते हैं कि हाथी, जंगली भैंसा व जंगली सूअर आदि प्राणी पूर्ण शाकाहारी होते हैं और बलवान भी होते हैं। भारत में अनेक ऐसे पहलवान हुये हैं जो पूर्ण शाकाहारी थे। उनमें मास्टर चन्दगीराम का नाम प्रसिद्ध है।

इसके अतिरिक्त **बालेश्वर मुनि जी** के केरल यात्रा के अनुभव भी सुनने का अवसर मिला। केरल के आदिवासी क्षेत्रों में जो लोग निवास करते हैं, उन पर ईसाइयत का बहुत अधिक प्रभाव है। वहाँ के एक विद्यालय में जब मुनि जी गये तो उन्होंने हिन्दी में कुछ समझाने का प्रयास किया, जिसे बच्चे नहीं समझ सके। फिर मुनि जी ने अंग्रेजी में पूछा कि क्या आप मेरी बात समझ पा रहे हैं, तो एक बच्चे ने तुरन्त अंग्रेजी में उत्तर दिया कि ''हाँ, हम आपकी बात समझ रहे हैं।'' इस स्थिति को देखकर हमें अपनी स्थिति का पता चलता है कि वास्तव में हमारी पहुँच वहाँ तक नहीं है, जहाँ तक होनी चाहिये थी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वहाँ पर सक्रिय है। वहाँ पर अधिकतर ऐसे विद्यालय जो हिन्दुत्व से प्रेरित हैं, वे संघ द्वारा ही संचालित हैं। ऐसे स्थानों पर हमारी उपस्थिति भी महत्त्वपूर्ण होती है। जो व्यक्ति पहले पहुँच जाता है, उसी की विचारधारा का वर्चस्व हो जाता। इसीलिये वहाँ के लोग हिन्दी से घृणा करते हैं, परन्तु अंग्रेजी को स्वीकार करने में संकोच नहीं करते। मुनि जी के केरल यात्रा के साथ-साथ **योगमुनि जी** के अनुभव भी सुनने को मिले। आपने ऋषि उद्यान में रहते हुये पाँचों दर्शनों का अनेक बार अध्ययन किया, मीमांसा का भी अध्ययन किया। आपने कई वर्षों के अनुभवों का सार सुनाया। नियम पालन पर विशेष बल देते हुये कहा कि छात्र/विद्यार्थी को गुरु की आज्ञा का पालन पूर्ण श्रद्धा के साथ करना चाहिये तभी वह विद्या को प्राप्त कर सकता है।

- ब्र. प्रभाकर एवं दीपक आर्य

केरल में वैदिक-धर्म प्रचार यात्रा

- बलेश्वर मुनि

भारतीय राज्य केरल, जिसने कभी आदि शंकराचार्य जैसी विभूति को जन्म दिया, आज वहाँ हमारी संस्कृति विलुप्त की ओर जा रही है। इस्लाम व ईसाई इन दोनों मतों को राज्य का बहुसंख्य वर्ग अपना चुका है और भी धर्मान्तरण का कार्य तेजी से चल रहा है। धन्य है स्वामी दर्शनानन्द जी, श्री राजन जी जैसे वैदिक मिशनरी जो इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनी पूर्ण शक्ति से वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। अपने इन्हीं प्रचार-प्रसार के कार्यक्रमों के अन्तर्गत गत दिनों जनवरी माह में आप लोगों ने वैदिक सिद्धान्तों पर एक कार्यशाला-आर्यसमाज वैलानेजी में आयोजित करवाई।

इस कार्यशाला में ऋषि उद्यान अजमेर से मैं (बलेश्वर मुनि) व रवि आर्य २० जनवरी २०१४ को प्रात:काल कालीकट हवाई अड्डे पहुँचे, जहाँ हमें लेने के लिए श्री राजन जी अपने मित्र शंकरन जी के साथ पूर्व में ही उपस्थित थे। कालीकट हवाई अड्डे से लगभग १५० किमी. दूर वेल्लानेजी आर्यसमाज में यह कार्यशाला आयोजित थी अत: हम वेल्लानेजी पहुँचे। हमारे ठहरने की व्यवस्था श्री नारायनन जी (उपप्रधान) के यहाँ की गई थी। २१ जनवरी को हमने श्रीधर शर्मा (कोषाध्यक्ष) के यहाँ उनकी पत्नी पद्मनि जी के ६२वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में हवन करवाया। इस अवसर पर श्री शर्मा ने पाक्षिक (अमावस्या-पूर्णिमा को) यज्ञ करने का संकल्प लिया। इसी दिन विद्याभारती समिति द्वारा संचालित सरस्वती विद्या निकेतन, मुलायनकव नामक विद्यालय व कुमार दास बाल आश्रम अनाथालय में भी जाना हुआ।

२२ जनवरी को यहाँ (वेल्लानेजी) से लगभग १५० किमी. दूर अट्टापाडि नामक वनवासी बहुल इलाके में जाना हुआ। यहाँ मलेश्वरी विद्या निकेतन विद्यालय में इलाके के बच्चों के लिए अध्ययन की समुचित व्यवस्था थी, इसके साथ-साथ इन्हें वैदिक संस्कृति का परिचय भी नियमित प्रदान किया जाता है। यहाँ के ही विवेकानन्द मिशन अस्पताल में भी जाना हुआ, जहाँ इलाके के रोगियों के समुचित उपचार व्यवस्था का प्रबन्ध था। पुन: यहाँ मध्याह्न भोजन लेकर समीपस्थ बड़ा कोटाहरा, खटाल व बन्नायार आदि (आदिवासी) बस्तियों में भी जाना हुआ, इनके मध्य हमने वैदिक धर्म, भक्ष्याभक्ष्य विषय को प्रस्तुत किया।

पुन: २३ जनवरी को यहाँ से वेल्लानेजी वापस लौटते हुए मुक्काली स्थित राजकीय वनवासी मॉडल स्कूल में विद्यार्थियों को उद्‌बोधन प्रदान किया। सायंकाल वेल्लानेजी में ही डॉ. शशी कुमार जी के यहाँ पहुँचे, आप एम.डी. में अध्ययन के दौरान आचार्य सत्यजित् जी के मित्र रह चुके हैं तथा वर्तमान में यहाँ बड़ा आयुर्वेदिक चिकित्सालय आपने खोला है। वैदिक धर्म, चरित्र निर्माण के लिए भी आप समय-समय में कार्यशाला आयोजित करते रहते हैं।

२४ जनवरी को सरस्वती विद्या निकेतन वेल्लानेजी में विशेष कार्यक्रम में बच्चों को वैदिक धर्म का परिचय प्रदान किया गया। २५ जनवरी को आर्यसमाज के सत्संग में भाग लिया। यहाँ प्रतिदिन हवन का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक रविवार को दोपहर पश्चात् वैदिक शंका-समाधान का सत्र चलाया जाता है। जिसमें आस-पास के जिज्ञासु युवक भाग लेते हैं। संस्कृत-ज्ञान-पिपासुओं के लिए संस्कृत प्रशिक्षण कक्षा भी चलाई जाती है, जिसमें लगभग तीस विद्यार्थी नियमित अध्ययन हेतु आते हैं, जो कि बड़ी बात है।

२६ जनवरी को नीला सेवा समिति द्वारा संचालित थानल बालिकाश्रम में जाना हुआ। यहाँ लगभग सौ बालिकाएँ रहती हैं, जिन्हें प्राय: गुरुकुलीय दिनचर्या में चलाया जाता है। यहाँ हमने एक ईसाई परिवार का शुद्धिकरण कर उन्हें वैदिक धर्मानुयायी बनाया।

पुन: धन्यवाद कार्यक्रम में सभी ने स्वामी दर्शनानन्द, श्री राजन जी, श्री शंकरन जी, श्रीधर शर्मा जी, नारायनन जी आदि कार्यकर्त्ताओं का इस आयोजन के लिए भूरिश: धन्यवाद किया।

ऋषि उद्यान, अजमेर (राज.)

जैसे इस संसार में अति कामना प्रशंसनीय नहीं और कामना के विना कोई कार्य्य सिद्ध नहीं हो सकता इसलिये धर्म्म की कामना करनी और अधर्म्म की नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४८

आर्यजगत् के समाचार

१. बलिदान दिवस सम्पन्न- मसूदा, तहसील के ग्राम धोला दाता में आज से एक वर्ष पूर्व श्री धुलेसिंह जी भगत के सुपुत्र श्री हुकमसिंह जी की हत्या कुछ असामाजिक तत्त्वों ने कर दी थी। स्व. हुकमसिंह जी सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों से जुड़े हुए थे। उनका गुजरात में समाज विरोधी तत्त्वों से विवाद होता रहता था। इसी का प्रतिकार उन्होंने उनकी हत्या करके लिया।

दि. १८/३/२०१४ को धोलादाता में उनके बलिदान दिवस का आयोजन किया, जिसमें परोपकारिणी सभा अजमेर के कार्यकारी प्रधान प्रो. धर्मवीर, मन्त्री ओममुनि व रमेश मुनि जी का व्याख्यान हुआ, जिसे सुनने ग्राम के सैकड़ों व्यक्ति एकत्र हुए। भजनोपदेशक पं. नोबतराम जी के भजनों का श्रोतागणों ने लाभ उठाया।

इस अवसर पर एक बृहद्यज्ञ का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने ऋषि उद्यान स्थित गुरुकुलों के लिए प्रतिवर्ष ५ बोरी गेहूँ देने का वादा किया।

२. अध्ययन प्रारम्भ- श्रावणी पर्व १० अगस्त २०१४ से श्रुति विज्ञान आचार्यकुलम् ग्रा. छपरा, शाहबाद मारकण्डा, कुरुक्षेत्र में आ. वेदव्रत जी शतपथ ब्राह्मण की नई कक्षा प्रारम्भ कर रहे हैं। अध्ययन की अवधि प्राय: २ वर्ष की होगी। इच्छुक विद्यार्थी अपनी योग्यता आदि विवरण लिखित में भेज कर अनुमति प्राप्त करें। अध्ययन काल में गुरुकुलीय नियमों का पूर्णतया पालन अनिवार्य होगा। आवश्यक पुस्तकें- शतपथ ब्राह्मण सायण भाष्य सहित, दर्शपूर्ण मास पद्धति (रेवली से प्रकाशित) सम्पर्क सूत्र- ९४१६४८८२६२, समय-मध्याह्नोत्तर ३ से ५ बजे तक।

३. साक्षात्कार- दूरदर्शन नैशनल चैनल पर २७ फरवरी २०१४ को ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में वरिष्ठ समाजशास्त्री-साहित्यकार डॉ. श्यामसिंह शशि से बातचीत की गई। उन्होंने 'ऋग्वेद' के पठन-पाठन से लेकर आज की शिक्षा-पद्धति तक पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द तथा उनकी कालजयी कृतियाँ आज भी प्रासंगिक हैं, उनकी गुरुकुल शिक्षा-पद्धति मानव-मूल्यों एवं श्रेष्ठ संस्कारों की वेल्यू एजूकेशन है।

४. बोध दिवस मनाया- महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध दिवस के पुनीत अवसर पर आर्यजगत् के विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये जिनमें करनाल से युवा विद्वान् संन्यासी स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती, वैदिक सिद्धान्त मर्मज्ञ पं. रामचन्द्र आर्य, सोनीपत, आर्य भजनोपदेशक पं. रामनिवास आर्य, पानीपत के सान्निध्य में उपस्थित मातृशक्ति, युवाओं, धर्मप्रेमी जन समूह को समुचित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मञ्च का संचालन महामन्त्री श्री सुदर्शन आर्य ने किया।

५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज वेद मन्दिर, गोविन्द नगर, कानपुर, उ.प्र. का ४५वाँ चार दिवसीय वार्षिकोत्सव १३ से १६ फरवरी २०१४ को बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में स्वामी केवलानन्द सरस्वती अलीगढ़, पं. महेन्द्रपाल आर्य, पूर्व इमाम, दिनेश दत्त आर्य भजनोपदेशक, दिल्ली ने श्रोताओं को वेदोपदेश किया। उत्सव यज्ञ से प्रारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति अन्तिम दिन हुई।

६. बोधोत्सव मनाया- आर्यसमाज, शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राजस्थान द्वारा महिला शिक्षण केन्द्र में दयानन्द बोधोत्सव पर्व मनाया। अध्यक्षता कन्हैयालाल आर्य ने की तथा मुख्य अतिथि डॉ. जितेन्द्र शास्त्री एवं विशिष्ठ अतिथि कल्याणमल मून्दड़ा व रामस्वरूप काबरा थे।

७. गायत्री महायज्ञ सम्पन्न- स्त्री आर्यसमाज माडल टाउन, जालन्धर में विगत ५४ वर्षों से गायत्री महायज्ञ चल रहा है। इस वर्ष भी अत्यन्त श्रद्धा व उत्साहपूर्वक मनाया गया। यह महायज्ञ व प्रवचन माला पूरा माघ महीना चलता रहा। इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें सभी वर्ग की माताएँ-बहनें, सज्जन भी उपस्थित होते हैं। इस बार का यह विशाल कार्यक्रम १४ जनवरी से १२ फरवरी तक चलता रहा। प्रतिदिन के कार्यक्रम में भारी संख्या में स्त्री, पुरुषों ने आहुतियाँ डाली। यज्ञ के बाद भजन एवं प्रवचन नियमित होते रहे। कार्यक्रम के प्रथम १० दिन आचार्य महावीर मुमुक्षु के उपदेश होते रहे। इनके पश्चात् स्वामी मधुरानन्द पधारे। इस एक महीने के यज्ञ के अन्दर सारे त्यौहार बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाएँ गए। इन विशेष कार्यक्रमों में दयानन्द माडल स्कूल, माडल टाउन, जालन्धर के छात्र-छात्राओं ने गीत, भजन एवं भाषणों से सबकों अपने संस्कृति एंव सभ्यताओं से अवगत कराया। समाज की माताओं व बहनों ने मधुर भजन प्रस्तुत किये। ७ फरवरी को महात्मा चैतन्यमुनि एवं माता सत्यप्रिया जी पधारे। १२ फरवरी को पूर्णाहुति समारोह ३१ हवन कुण्डों में दोपहर २ बजे प्रारम्भ हुआ। प्रत्येक हवन कुण्ड में यजमानों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ डाली। विशेष रूप से गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी भी इस पावन यज्ञ में शामिल हुए। उसके बाद स्त्री सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. श्रीमती अतिमा शर्मा कन्या महाविद्यालय ने की। उन्होंने कहा कि नारी सशक्तिकरण पर हमें विशेष बल देना चाहिए।

प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी ने अपनी साथियों सहित आये हुए मेहमोनों को फूलमालाओं, बुकों, शॉल, पुस्तकें, स्वामी दयानन्द जी के चित्र भेंट कर स्वागत किया। मन्त्राणी प्रमिला अरोड़ा जी ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। कार्यक्रम का प्रारम्भ

श्रीमती दमयन्ती सेठी तथा रजनी सेठी ने ओ३म् नाम भजन गाकर किया फिर सरस्वती सिन्धु न्यास स्कूल की छात्राओं ने भजन गाकर भाव विभोर किया। समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई ने प्रधाना जी एवं उनके साथियों को इस सुन्दर कार्यक्रम के आयोजन के लिए साधुवाद दिया और कहा इसी प्रकार प्रचार करते रहना चाहिए तथा समाज से जुड़ने का आह्वान किया। समारोह के मुख्यातिथि श्रीमती हर्ष अरोड़ा थी। स्व. श्री हरवंशलाल शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती राजरानी शर्मा उपस्थित थी। उनके बहु श्रीमती ज्योति शर्मा ने बहुत सुन्दर प्रवचन कविता के रूप में दिया। श्रीमती रश्मि घई के भजन हुए। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश शास्त्री एवं पं. बुद्धदेव वेदालंकार थे। पश्चात् प्रधाना जी ने आये हुए सभी का धन्यवाद किया।

८. स्नेह सम्मेलन एवं संगोष्ठी सम्पन्न- वैदिक आध्यात्मिक न्यास, अजमेर का द्वितीय वार्षिक स्नेह सम्मेलन एवं संगोष्ठी ७-८-९फरवरी २०१४ को उसके उपकार्यालय वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में जहाँ विद्वानों का परस्पर परिचय व विचारों के आदान-प्रदान का अवसर प्राप्त हुआ, वहीं पूज्य स्वामी सत्यपति जी के दर्शन व आशीर्वचनों का लाभ भी प्राप्त हुआ। संगोष्ठी के श्रोताओं से भरे विभिन्न सत्रों में अनेक विषयों पर सार्थक परिचर्चाएँ हुई, भजन-प्रवचन हुये व जिज्ञासा समाधान भी किया गया। दोनों समय सामूहिक उपासना के कार्यक्रम से भी सदस्य लाभान्वित हुये। विभिन्न विद्वानों ने अपने सार्थक कार्यक्रमों अनुभवों, शोधों, प्रश्नों व समस्याओं से अन्यों को अवगत कराया, उन पर अन्य विद्वानों के विचार, समाधान आदि भी सुनने को मिले।

८ फरवरी को प्रात: यज्ञोपरान्त स्वामी सत्यपति जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मनुष्य जीवन की सफलता ईश्वर-प्राप्ति कर लेने में ही है। ९ फरवरी को यज्ञोपरान्त स्वामी सत्यपति जी ने अपने उपदेश में कहा कि दु:ख छोड़ने योग्य है तथा ईश्वर व मोक्ष प्राप्त करने योग्य हैं।

संगोष्ठी के सभी सत्रों में श्रोताओं की भरपूर उपस्थित एवं अभिरुचि बनी रही। इस संगोष्ठी में वैदिक आध्यात्मिक न्यास के सदस्य विद्वान् भाग ले सकते थे। आर्य समाज में नवोत्साह व जीवन्तता बनाये रखने का संकल्प लिये ये अधिकांश युवा सदस्य देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। इस सम्मेलन में एकत्र होकर ये परस्पर ज्ञान-विज्ञान, अनुभव, उत्साह का आदान-प्रदान करते हुए भविष्य के लिये श्रेष्ठतर विज्ञान, समर्पण और नवोत्साह के साथ आत्मोन्नति एवं समाजोन्नति का संकल्प लिये अपने-अपने कार्यस्थलों को लौट गये। ईश्वर कृपा व वानप्रस्थ साधक आश्रम के आचार्यों, कार्यकर्ताओं व ब्रह्मचारियों के अहर्निश प्रयास से संगोष्ठी का कार्यक्रम सफल रहा।

९. बलिदान दिवस मनाया- केन्द्रीय आर्य सभा, मेरठ महानगर के तत्त्वावधान में प० लेखराम बलिदान दिवस आर्य समाज, थापर नगर में अत्यन्त श्रद्धा एवं समर्पण भाव से मनाया गया, जिसमें मेरठ महानगर के समस्त आर्य समाजों ने भाग लिया। आर्य भजनोपदेशक कृष्णदत्त नादान, मुख्य वक्ता आर्य विद्वान् सत्येन्द्र सिंह आर्य उपस्थित रहे।

१०. शिविर सम्पन्न- हरियाणा राज्य के प्रसिद्ध नगर अम्बाला में विशाल पंडाल में सैंकडों सपत्निक यजमानों व अन्य यजमानों तथा श्रोतागण की उपस्थिति में पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, दर्शनाचार्य वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ गुजरात के निर्देशन व ब्रह्मत्व में सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास, पंजीकृत पानीपत के तत्त्वावधान में यह शिविर निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन को सफल करने में शिविर संयोजक श्री राजेश बत्तरा जी, सभी व्यवस्था सम्भाल रहे शिविर के धुरी श्री अर्जुन लाल चिटकारा जी- मन्त्री आर्यसमाज मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर व अन्य अनेक महिलाओं, पुरुषों का भरपूर सहायोग रहा है। यज्ञ व्यवस्था गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों द्वारा उत्तम प्रकार से की गई। अन्त में शिविर के समापन अवसर पर महात्मा वेदपाल आर्य-अध्यक्ष सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास ने तथा शिविर संयोजक श्री राजेश बत्तरा जी ने परमपिता परमात्मा का विशेष धन्यवाद करते हुए एवं पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, विद्वानों, विशिष्ठ अतिथियों, बह्मचारीगण, सभी आर्यसमाजों, अन्य संस्थाओं, यजमानों, श्रोताओं, कार्यकत्ताओं, स्वयंसेवकों तथा दानी मानुभावों के प्रति धन्यवाद व आभार प्रकट करते हुए कृतज्ञता प्रकट की।

११. वेद कथा सम्पन्न- पाकिस्तान की सीमा पर बसा हुआ बाड़मेर जिले में विश्नोई समाज के लोग बाहुल्य में बसते हैं। यहाँ केवल भागवत तथा रामायण कथा विष्णु पुराण आदि वर्ष में अनेक कार्यक्रम होते रहते हैं। जिनमें लाखों रुपये व्यय किये जाते हैं। पहली बार इस क्षेत्र में १ से ६ फरवरी तक वेद कथा का आयोजन किया गया। जिसमें होशंगाबाद मध्यप्रदेश के आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी जी आमन्त्रित थे। केवल दोपहर में २ से ५ तक सत्संग का कार्यक्रम होता था। बिजनौर उ.प्र. से पधारे हुए भजनोपदेशक पण्डित श्री भीष्म आर्य व नेत्रपाल जी के भजन होते थे फिर आचार्य जी का उपदेश होता था। प्रथम दिन शोभा यात्रा भी निकाली गई थी। जो ग्राम के मुख्य मार्ग से होती हुई विशाल पण्डाल में समाप्त हो गई। जिससे वातावरण बन गया था। समय निकाल कर ३ विद्यालयों में आचार्य जी अपनी टीम के साथ गए और छात्र-छात्राओं में उपदेश किया। विश्नोई समाज के सन्त स्वामी हरिदास जी का वरद हस्त रहा।

आप प्रतिदिन कथा में सम्मिलित भी हुए और अन्तिम दिन अपने प्रेरणास्पद उदबोधन में जनता जनार्दन को इस सच्चे वैदिक मार्ग पर चलने का आग्रह किया।

१२. वेद प्रचार- पण्डित नरेश दत्त आर्य भजनोपदेशक बिजनौर, उ.प्र. द्वारा एक ऐसा रथ बनाया गया है जिसको खोलने से वह मञ्च बन जाता है, उसमें ही माइक, लाइट, जनरेटर आदि सभी सुविधायें भी उपलब्ध हैं। इस बार आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद व आर्यसमाज होशंगाबाद के संयुक्त प्रयासों से टिमरनी, टेमागाँव, तिन्सिया, नन्दुरवाडा, बमूरिया, रोहना, बेराखेड़ी, गुनोरा सहित ८ गाँवों में प्रचार किया गया। लोगों का यह कहना रहा भागवत, रामायण, पुराणों की कथायें तो हमें हर जगह सुनने में आती हैं पर पहली बार इतनी सहजता, सरलता व कम खर्चे में वेदों, दर्शनों व उपनिषदों के बारे में सुनने को मिल रहा है। अधिकतम समय में मुख्य वक्ता व रथ यात्रा के संयोजक आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी सहित सभी का यथोचित आशीर्वाद जनता जनार्दन को प्राप्त हुआ। वयोवृद्ध पण्डित मामचन्द आर्य पथिक, पण्डित नरेश दत्त आर्य व उनके पुत्र नरेन्द्र दत्त के विभिन्न विषयों पर मधुर भजनों ने लोगों का मन मोह लिया।

१३. महर्षि दयानन्द जन्मदिवस- आर्यसमाज छिन्दवाड़ा २४ फरवरी को व महर्षि दयानन्द गुरुकुल सोनाखार छिन्दवाड़ा, म.प्र. ने स्वामी दयानन्द जयन्ती मनाई। इस अवसर पर जिले की अनेक विभूतियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा अजमेर से विद्वानों को भी आमन्त्रित किया गया जिसमें मुख्य वक्ता एवं अतिथि परोपकारिणी सभा, अजमेर से श्री देवमुनि जी, वेदमुनि जी, आचार्य सत्यप्रियार्य ने यहाँ कार्यक्रम में भाग लिया एवं प्रवचन किये।

१४. सम्मानित- कोटा क्षेत्र में आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार व राजस्थान में अपनी विद्वत्ता के लिये पहचाने जाने वाले सुनेल (झालावाड़) निवासी कन्हैयालाल गुप्त के पुत्र तथा आर्य संस्कारों में पले-बढ़े व जाने-माने पत्रकार आत्मदीप का मध्यप्रदेश राज्य के सूचना आयुक्त मनोनीत किये जाने पर आर्यसमाज जिला सभा कोटा, राजस्थान द्वारा अभिनन्दन करते हुए सम्मान किया।

१५. डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री को राष्ट्रपति-सम्मान- आर्यसमाज के प्रख्यात विद्वान् एवं संस्कृत के कवि एवं लेखक डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री को विगत गणतन्त्र दिवस के अवसर पर संस्कृत भाषा में उनकी निपुणता एवं शास्त्रीय पाण्डित्य के लिए राष्ट्रपति सम्मान से अलंकृत किया। डॉ. शास्त्री ने एक दर्जन से भी अधिक पुस्तकें संस्कृत भाषा में लिखी हैं, जिनमें उनके द्वारा लिखित 'अनभीप्सितम्' नामक कथा संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार भी २००९ में प्रदान किया गया है। राष्ट्रपति भवन के दरबार हॉल में आयोजित एक विशेष समारोह में राष्ट्रपति ने उन्हें सम्मान के साथ ही पाँच लाख रुपये की राशि एवं शॉल प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

१६. आवश्यकता- महाराष्ट्र प्रान्त में हिन्दू स्वाभिमान प्रतिष्ठान के तत्त्वावधान में महाराष्ट्र में विशाल कन्या गुरुकुल शुरू करने की योजना कार्य रूप ले रही है, इस गुरुकुल के लिये आर्य पद्धति के गुरुकुल में उच्च शिक्षित ब्रह्मचारिणी को प्रबन्धक आचार्या के रूप में नियुक्ति करनी है। आवेदक को गुरुकुलीय आर्य शिक्षा, सी.बी.एस.ई. शिक्षा पद्धति एवं गुरुकुल प्रबन्धन का अनुभव हो। आर्य वैदिक वातावरण में 'शास्त्री' तक या इससे उच्च शिक्षित, संस्कृत भाषा तथा व्याकरण, वैदिक साहित्य एवं दर्शन आदि से सुपरिचित तथा प्रबन्धन का अनुभव होने वाली ब्रह्मचारिणी अपनी पूरी जानकारी तथा फोटो के साथ आवेदन करें। नियुक्त आचार्या की निवास तथा सात्विक आहार की पूरी व्यवस्था संस्था करेगी तथा पाँच अंकों तक का वेतन दिया जायेगा। कृपया अपने आवेदन शीघ्र इस पते पर भेजें-

कार्यकारी संचालक, हिन्दू स्वाभिमान प्रतिष्ठान, द्वारा- आर्यसमाज पिम्परी, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्यसमाज चौक, पिम्परी, पुणे-४११०१७

वैवाहिक

१७.प्रतिष्ठित पंजाबी खत्री, आर्यसमाजी परिवार की मेधावी कन्या २७ वर्षीय, कद ५ फुट २.५ इंच, शिक्षा एम.एस.सी. (बायो) आई.आई.टी. मुम्बई से, वर्तमान बैंगलूर में पी.एचडी. अध्ययनरत, स्कॉलरशिप ३ लाख रु. हेतु समकक्षीय वर पक्षीय परिवार के प्रस्ताव आमन्त्रित है। सम्पर्क- ०९९१७६५८७१६, ई-मेल veerbloomi5@gmail.com

१८. सुश्री कनिष्का तनेजा, आयु २६ वर्ष, गौर वर्ण, कद ५ फुट, शिक्षा फैशन डिजाईनर डिप्लोमा। **सम्पर्क**- ०९८२९८६३६८७, ०१४५-२६६२५७७

१९. आर्य कन्या, शिक्षा एम.ए., बी.एड., जन्मतिथि १०-०७-१९८७ रंग सांवला (हल्का), आर्य परिवार या सजातीय गौत्र डाँगी (पांचाल) का वर चाहिए। **सम्पर्क**- ९२५३१४३०६९

चुनाव

२०. आर्यसमाज तेराजाकेट, जि. कन्नौज, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- डॉ. वीरेन्द्र कुमार आर्य, **मन्त्री**- श्री गौरव दुबे, **कोषाध्यक्ष**- श्री अमित श्रीवास्तव को चुना गया।

२१. आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री सीताराम आर्य, **मन्त्री**- श्री सियाराम आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री देवेन्द्र आर्य को चुना गया।

२२.आर्यसमाज कैनाल पटरी, १३ ब्लॉक, पृथ्वीराज चौहान मार्ग, गोविन्द नगर, कानपुर, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री हरिवंश आर्य 'सरल', **मन्त्री**- श्री ओम प्रकाश सचान, **कोषाध्यक्ष**- श्री आनन्द गुप्ता को चुना गया।

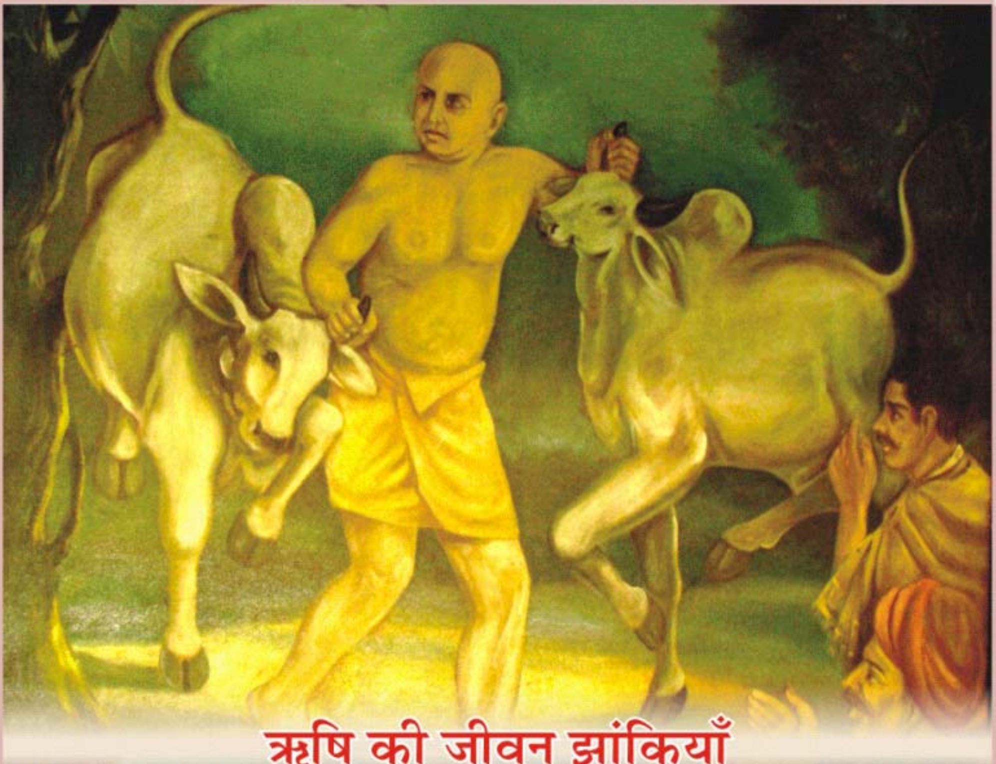

ऋषि की जीवन झांकियाँ

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक
प्रेषण : ३० मार्च , २०१४
RNI. NO. ३९५९/५९

ऋषि उद्यान - मुख्य द्वार

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@ Mittal 9829797513